कोटद्वार, बुधवार
8 अक्टूबर 2025
वर्ष: 47
अंक: 150 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

आपदाग्रस्त बटोली गांव में जीवन पटरी पर लौटने लगा

विकासनगर। आपदाग्रस्त बटोली गांव सड़क से जुड़ गया है। बारिश बंद होते ही जिला प्रशासन ने सात दिन के भीतर ही आपदाग्रस्त क्षेत्र बटोली को संपर्क मार्ग से फिर से जोड़ दिया है। अब लोगों के वाहन गांव तक पहुंचने लगे हैं। बटोली गांव में पिछले साल अगस्त में आपदा आई थी। जिसके कारण वहां शेरूखाला गदेरे में लंबी–चौड़ी खाई बन गई थी। जिससे गांव का संपर्क अन्य जगह से कट गया था। इसके बाद फिर इस साल जुलाई माह में भी शेरूखाला गदेरे में फिर से पानी आने से पहले जैसे हालत हो गए थे। जिसके बाद ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से राहत की गुहार लगाई थी। जिसका संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी सविन बंसल प्रशासनिक टीम के साथ 11 जुलाई को बटोली गांव पहुंचे और ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं। अतिवृष्टि के कारण खाई युक्त बने टीले में परिवर्तित शेरूखाला के रास्ते पर रातों–रात वैकल्पिक मार्ग भी बनाया था। वर्षाकाल में पूरे 03 महीने तक रास्ता सुचारु रखने के लिए डीएम ने वहां 24 घंटे मशीनों के साथ कर्मचारी तैनात किए। इस दौरान डीएम ने क्षेत्रवासियों की वर्षों पुरानी विद्युत, पेयजल समस्या का समाधान के लिए एक हफ्ते के भीतर ही बजट जारी कर दिया था। क्षेत्र में जंगल के बीच में गुजर रही विद्युत लाइन बाधित हो जाती थी।

अनियंत्रित होकर सड़क पर पलटा वाहन, चार घायल

उत्तरकाशी। यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर राजतर के निकट एक बोलेरो वाहन अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया। जिससे उसमें चार लोग घायल हो गए। घायलों का सीएचसी बड़कोट में उपचार किया जा रहा है। जबकि एक गंभीर घायल को हायर सेंटर रेफर किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बड़कोट की ओर आ रहा एक बोलेरो वाहन अनियंत्रित होकर राजतर के पास सड़क पर पलट गया। हादसे में सुनील (35) पुत्र हरीलाल, निवासी ग्राम पोन्टी तहसील बड़कोट, राजेंद्री देवी (32) पत्नी कैलाश, निवासी ग्राम नाकोरा तहसील बड़कोट, कैलाश (31) पुत्र प्रेम सिंह, निवासी ग्राम नाकोरा तहसील बड़कोट, प्रेमा देवी (40) पत्नी भागीरथ, निवासी ग्राम हालना तहसील बड़कोट को सामान्य हल्की चोटें आयी है। डॉ अंगद सिंह राणा ने बताया एक गंभीर घायल सुनील कुमार को हायर सेंटर रेफर किया गया है, जबकि अन्य का उपचार किया जा रहा है।

आठ मेडिकल स्टोर में छापेमारी, कफ सीरप के पांच नमूने ले जांच को भेजे

हल्द्वानी। बच्चों की सुरक्षा और जनस्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए औषधि नियंत्रण विभाग ने मंगलवार को हल्द्वानी क्षेत्र में थोक औषधि प्रतिष्ठानों में छापेमारी की। विभाग की टीम ने 8 प्रतिष्ठानों में रखे गए सिरप की गहनता से जांच की। इनमें डेक्सट्रोमेथॉर्फन हाइड्रोब्रोमाइड, क्लोरफेनिरामाइन मेलिएट व फिनाइलएफ्रिन हाइड्रोक्लोराइड युक्त पीडियाट्रिक कफ सिरप के पांच नमूने इकठ्ठा किए। इन नमूनों को गुणवत्ता परीक्षण के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा। वरिष्ठ औषधि निरीक्षक मीनाक्षी बिष्ट ने बताया कि निरीक्षण का उद्देश्य बच्चों के लिए उपयोग होने वाली दवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। उन्होंने बताया कि अब तक नैनीताल जिले से कफ सिरप के कुल 14 नमूने लेकर राजकीय विश्लेषण शाखा देहरादून में जांच के लिए भेजे जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यालय से अधिक से अधिक सैंपल लेकर भेजने के निर्देश दिए हैं। औषधि विभाग ने चेतावनी दी है कि नियमों का उल्लंघन करने वाले थोक व रिटेल कारोबारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। टीम में औषधि निरीक्षक नैनीताल अर्चना शामिल रहीं।

ढ़लान में खड़ा वाहन खाई में गिरा

चम्पावत। लोहाघाट के बाराकोट के खोला सुनार के पास ढ़लान में खड़ा एक पिकअप वाहन गहरी खाई में लुढ़क गया। गनीमत रही कि दुर्घटना के वक्त वाहन में कोई भी सवार नहीं था। जानकारी के मुताबिक मंगलवार सुबह करीब दस बजे बीएसएनएल के कार्य में लगी पिकअप संख्या यूपी 57 टी 9007 ढ़लान में खड़ी थी। इसी दौरान वाहन करीब 40 फिट गहरी खाई में गिर गई। कंपनी के कार्य में लगे इंजीनियर अमित कुमार ने बताया कि चालक राजवीर बाराकोट के खोला सुनार निर्माण सामग्री और मजदूरों को लेकर आया था।

उत्तराखंड में मदरसा बोर्ड खत्म

राज्यपाल ने धामी सरकार के इस नए बिल को दी मंजूरी

देहरादून। उत्तराखंड में धामी सरकार के अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक, 2025 को मंजूरी मिल गई है। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह की मंजूरी के बाद अब यह बिल एक कानून की शक्ल ले चुका है। इसके साथ ही मदरसा बोर्ड को खत्म कर दिया जाएगा और सभी अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों के लिए एक समान कानून लागू होगा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा, "राज्यपाल की मंजूरी के साथ, इस विधेयक के कानून बनने का रास्ता साफ हो गया है।" उन्होंने 'एक्स' ( ) पर कहा, "इस कानून के तहत, अल्पसंख्यक समुदायों की शिक्षा प्रणाली के लिए एक अथॉरिटी (प्राधिकरण) बनाई जाएगी, जो अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को मान्यता देगी।" मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा, "यह कानून निश्चित रूप से राज्य में शिक्षा प्रणाली को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और गुणवत्तापूर्ण बनाने में मदद करेगा।" बयान में कहा गया है कि

इस विधेयक के लागू होने के साथ, मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम, 2016 और गैर–सरकारी अरबी और फारसी मदरसा मान्यता नियम, 2019, 1 जुलाई, 2026 को समाप्त हो जाएंगे।

इस साल अगस्त में राज्य कैबिनेट से मंजूरी मिलने के बाद, यह विधेयक उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण में आयोजित विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान पारित किया गया था। बयान में कहा गया है कि इस विधेयक के तहत, मुस्लिम समुदाय के संस्थानों के साथ–साथ अन्य अल्पसंख्यक समुदायों जैसे सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई और पारसी से संबंधित शिक्षण संस्थानों को भी राज्य में अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान का दर्जा मिलेगा। इसमें यह भी कहा गया है कि अभी तक अल्पसंख्यक संस्थानों को मान्यता केवल मुस्लिम समुदाय तक ही सीमित थी। बयान के अनुसार, यह विधेयक एक प्राधिकरण की स्थापना का प्रावधान करता है जो सभी अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थानों के लिए मान्यता देना अनिवार्य करेगा। बयान में आगे कहा गया है कि यह प्राधिकरण यह भी सुनिश्चित करेगा कि इन संस्थानों में शिक्षा उत्तराखंड बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार दी जाए। छात्रों का मूल्यांकन निष्पक्ष और पारदर्शी हो।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पहले कहा था कि मदरसा शिक्षा प्रणाली वर्षों से गंभीर समस्याओं का सामना कर रही थी, जिनमें केंद्रीय छात्रवृत्ति वितरण में अनियमितताएं, मध्याह्न भोजन योजना में गड़बड़ी और प्रबंधन में पारदर्शिता की कमी शामिल थी। उन्होंने कहा कि यह विधेयक सरकार को अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों के संचालन की प्रभावी ढंग से निगरानी करने और जरूरी निर्देश जारी करने के लिए सशक्त बनाएगा, जिससे राज्य में शैक्षिक उत्कृष्टता और सामाजिक सद्भाव को और मजबूती मिलेगी।

हिमाचल में बड़ा हादसा : बिलासपुर में बस की छत पर गिरा भूस्खलन का मलबा, अब तक 15 लोगों की मौत, कई अंदर फंसे

बिलासपुर ,हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में मंगलवार को बड़ा हादसा हो गया। मरोतन से घुमारवीं जा रही बस झंडूता के बरठीं में दुर्घटनाग्रस्त का शिकार हो गई। बताया जा रहा है कि भूस्खलन का मलबा सीधे बस की छत पर गिरा। अब तक इसमें 15 लोगों की मौत हो चुकी है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची बचाव दल की टीम रेस्क्यू में जुटी हुई है। बताया जा रहा है कि बस में 30 लोग सवार थे।* इस घटना पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने गहरा शोक व्यक्त किया है. उन्होंने मृतकों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है. उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस कठिन समय में प्रभावित परिवारों के साथ पूरी मज़बूती से खड़ी है और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी.* *मुख्यमंत्री निरंतर जिला प्रशासन के संपर्क में हैं और उन्होंने राहत एवं बचाव कार्यों में और अधिक तेजी लाने के निर्देश दिए हैं. उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने को कहा है कि घायलों को तुरंत उपचार हेतु अस्पताल पहुंचाया जाए और उनके इलाज की पूरी व्यवस्था की जाए. मुख्यमंत्री शिमला से पूरे हालात की लगातार निगरानी कर रहे हैं.

केदारनाथ की पहाड़ियों में गिरी बर्फ

रुद्रप्रयाग : केदारनाथ धाम सहित हिमालय की ऊंची पहाड़ियों में दूसरे दिन भी बर्फबारी हुई। सुबह से हो रही बर्फबारी दिनभर रुक-रुककर होती रही, जिससे मौसम ठंडा हो गया है। केदारनाथ में अक्तूबर में ही नवंबर जैसा मौसम दिखाई दिया। हालांकि अभी भी कपाट बंद होने में 13 दिन शेष बचे हैं। मंगलवार को भी केदारनाथ धाम से लगी पहाड़ियों में जोरदार बर्फबारी होती रही। मंदिर परिसर सहित सम्पूर्ण केदारपुरी में रुक-रुककर बर्फबारी हुई। हालांकि अभी मंदिर परिसर और आस-पास के इलाकों में बर्फ जम नहीं रही है किंतु पहाड़ियों में बर्फ की सफेद चादर दिखने लगी है। केदारनाथ की भैरव पहाड़ी से लेकर मेरु-सुमेरु पर्वत और मंदाकिनी नदी से लगी पहाड़ियों के ऊपर 3 इंच से अधिक बर्फ जमा हो गई है। केदारनाथ में मंगलवार को भी बारिश और बर्फबारी होती रही, जिससे मौसम काफी ठंडा हो गया है। यात्रियों ने ठंड के बीच बर्फबारी का आनंद लिया। इधर, तुंगनाथ की ऊंची पहाड़ी चन्द्रशिला और आसपास भी

बर्फबारी हुई है जबकि मदमहेश्वर की ऊंची पहाड़ियों में बर्फ गिरी है। दीपावली से पहले बदले मौसम और बर्फबारी से पहाड़ों में ठंड ने दस्तक दे दी है। केदारनाथ में वुड स्टोन के प्रबंधक कैप्टन सोबन सिंह बिष्ट ने बताया कि बीते दिन से केदारनाथ में बर्फबारी हो रही है। धाम के चारों ओर पहाड़ियों में करीब 3 इंच बर्फ गिर गई है। मंदिर परिसर और आसपास बर्फबारी हो रही है किंतु बर्फ अभी जमा नहीं हो रही है। यहां तापमान में भी गिरावट आ गई है। यात्री एवं स्थानीय लोग गरम पकड़ों के साथ ही अलाव का सहारा ले रहे हैं। (एजेंसी)

पीएम मोदी के आरोपों पर भड़कीं सीएम ममता बनर्जी

सीएम ने प्रधानमंत्री पर लगाया बाढ़ आपदा का राजनीतिकरण का आरोप

कोलकाता , पश्चिम बंगाल में भाजपा सांसद और विधायक पर हमले ने तूल पकड़ लिया है।। इस पर प्रधानमंत्री मोदी ने टीएमसी सरकार पर बयान दिया तो सीएम ममता बनर्जी ने बाढ़ आपदा का राजनीतिकरण करने के लिए प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया और बदले में जुबानी हमले किए। सांसद पर हमले घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को एक्स पर लिखा था, बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित लोगों की सेवा करने के लिए हमारी पार्टी के सहयोगियों, जिसमें एक सांसद और विधायक शामिल हैं, पर पश्चिम बंगाल में हमला किया जाना बेहद शर्मनाक है। यह टीएमसी की असंवेदनशीलता और राज्य में कानून–व्यवस्था की पूरी तरह दयनीय स्थिति को उजागर करता है।

ऐसे में ममता बनर्जी ने पीएम मोदी के बयान पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने एक्स पर जवाब देते हुए कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण और गहराई से चिंताजनक है

कि भारत के प्रधानमंत्री ने उचित जांच का इंतजार किए बिना प्राकृतिक आपदा का राजनीतिकरण करने का फैसला किया है, खासकर जब उत्तर बंगाल के लोग विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन के बाद की स्थिति से जूझ रहे हैं। बनर्जी ने कहा, पीएम ने बिना किसी सत्यापित सबूत, कानूनी जांच या प्रशासनिक रिपोर्ट के टीएमसी और पश्चिम बंगाल सरकार पर सीधे आरोप लगाए। यह न केवल राजनीतिक निम्न स्तर है, बल्कि प्रधानमंत्री ने जो संवैधानिक मर्यादा की शपथ ली है, उसका उल्लंघन भी है। ममता ने कहा लोकतंत्र में कानून को अपना काम करने देना चाहिए, और केवल उचित प्रक्रिया ही दोष सिद्ध कर सकती है, न कि राजनीतिक मंच से एक ट्वीट। ममता ने चेतावनी दी कि ऐसी असत्यापित आरोपों से सर्वोच्च पद की गरिमा कम होती है। इससे पहले, उन्होंने लोगों से संयम बरतने और किसी भी असामान्य घटना से बचने की अपील की थी। उन्होंने बाढ़ को मानव–निर्मित बताते हुए दामोदर वैली कॉर्पोरेशन द्वारा बिना नियंत्रण पानी छोड़ने का दोष केंद्र सरकार पर डाला। एक बयान में उन्होंने कहा, हमें बांधों की जरूरत नहीं है।ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर सोमवार आधी रात के बाद साझा किए गए अपने बयान में कहा कि प्रधानमंत्री ने बिना

धमाके से दहला पाकिस्तान : बलूच विद्रोहियों ने सेना को निशाना बना उड़ाई ट्रेन, 6 डिब्बे पटरी से उतरे

क्वेटा , पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में एक बार फिर जाफर एक्सप्रेस ट्रेन को निशाना बनाया गया है। बलूच विद्रोही संगठन ने क्वेटा जा रही ट्रेन पर सुल्तानकोट इलाके के पास (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) से हमला किया, जिससे एक बड़ा धमाका हुआ। धमाके के कारण ट्रेन के 6 डिब्बे पटरी से उतर गए और इस घटना में कई लोगों के घायल होने की खबर है। इस हमले की जिम्मेदारी बलूच विद्रोही संगठन 'बलोच रिपब्लिक गार्ड्सझ् ने ली है। संगठन ने एक बयान जारी कर कहा है कि ट्रेन को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि उसमें पाकिस्तानी सेना के जवान सवार थे। बयान में दावा किया गया है, ट्रेन पर उस वक्त हमला किया गया, जब उस पर पाकिस्तानी सेना के जवान सवार थे। इस विस्फोट में पाकिस्तानी सेना के कई लोग मारे गए हैं और कुछ घायल हुए हैं। विद्रोही संगठन ने भविष्य में भी ऐसे हमले जारी रखने की धमकी दी है और कहा है कि बलूचिस्तान की आजादी तक उनका संघर्ष जारी रहेगा। घटना के बाद पाकिस्तानी सुरक्षा बल मौके पर पहुंच गए हैं और बचाव अभियान चलाया जा रहा है। सोशल मीडिया पर घटनास्थल के कई वीडियो और तस्वीरें सामने आई हैं, जिनमें पलटे हुए डिब्बे और अफरा–तफरी का माहौल दिख रहा है। हालांकि, अभी तक किसी की मौत की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

छह और ग्यारह, एनडीए नौ दो ग्यारह

बिहार चुनाव की घोषणा के बाद लालू प्रसाद यादव ने कसा तंज

पटना ,पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने बिहार सरकार पर तंज कसा है। उन्होंने दावा किया है कि आगामी विधानसभा चुनाव में डबल इंजन सरकार की विदाई तय है। बिहार विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। चुनावी तैयारियों के साथ–साथ आरोप–प्रत्यारोप का सिलसिला भी शुरू हो गया है। एनडीए और इंडिया ब्लॉक के दल अपनी–अपनी सरकार बनाने का दावा कर रहे हैं। इसी बीच, पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार से डबल इंजन सरकार की विदाई तय है। लालू प्रसाद यादव ने सोशल मीडिया प्लेट-फॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, छह और ग्यारह, एनडीए नौ दो ग्यारह। इस पोस्ट के जरिए उन्होंने संकेत दिया कि बिहार से एनडीए की विदाई तय है। यह पहली बार

नहीं है जब लालू प्रसाद यादव ने बिहार सरकार पर निशाना साधा है। वह अक्सर सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से सरकार पर कटाक्ष करते रहते हैं। एक अन्य पोस्ट में पूर्व सीएम ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में चल रही सरकार पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए कहा कि बिहार की डबल इंजन की सरकार का मतलब भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है। उन्होंने कहा कि इस भ्रष्ट व्यवस्था को बदलना है। इस बार बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री को बदलना है और सरकार भी बदलेंगे। जहां एक ओर लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को लेकर हमलावर रहे हैं और सरकार बदलने का दावा कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ बिहार का नेतृत्व वह अपने बेटे और राजद नेता तेजस्वी यादव में देखते हैं। उन्होंने कई मंचों से तेजस्वी को बिहार का अगला मुख्यमंत्री बनाने के लिए जनता से अपील भी की है। एक पोस्ट में उन्होंने लिखा था, तेजस्वी के नेतृत्व में, नया बिहार बनाएंगे। बता दें कि बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए मतदान 6 नवंबर को और दूसरे चरण के लिए 11 नवंबर को मतदान होगा। वहीं, चुनाव के नतीजे 14 नवंबर को जारी होंगे।

अब अस्पताल नहीं कर पाएंगे कैशलेस इलाज से इन्कार

केंद्रीय कर्मचारियों–पेंशनर्स को सरकार ने दिया बड़ा तोहफा

नई दिल्ली , केंद्र सरकार ने देश के करीब 46 लाख केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनर्स को बड़ी राहत देते हुए केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य योजना की दरों में एक दशक बाद बड़ा संशोधन किया है। इलाज की नई दरें 13 अक्टूबर से लागू हो जाएंगी, जिससे निजी अस्पतालों द्वारा कैशलेस इलाज से इनकार करने की समस्या खत्म होने की उम्मीद है। सरकार ने अस्पतालों के लिए दरों में औसतन 25–30 की बढ़ोतरी की है और सभी – पैनलबद्ध अस्पतालों को नई दरें स्वीकार करने का सख्त निर्देश दिया है।

क्यों पड़ी बदलाव की जरूरत

पिछले कई सालों से यह एक बड़ी समस्या बन गई थी कि ज्यादातर निजी अस्पताल पुरानी दरों को बहुत कम

बताकर कैशलेस इलाज देने से मना कर देते थे।

इससे कर्मचारियों और पेंशनर्स को इलाज का खर्च पहले अपनी जेब से देना पड़ता था और बाद में रिफंड के लिए महीनों इंतजार करना पड़ता था। वहीं, अस्पतालों का तर्क था कि 2014 के बाद से दरों में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ था, जबकि मेडिकल खर्चों में कई गुना वृद्धि हो चुकी है। कर्मचारी यूनियनों की लगातार मांग के बाद सरकार ने यह अहम फैसला लिया है।

नई दरें कैसे होंगी तय

सरकार ने अब एक पारदर्शी और व्यावहारिक फॉर्मूला तैयार किया है, जिसके तहत दरें चार मुख्य कारकों पर आधारित होंगीः

1. अस्पताल का एक्रेडिटेशन प्रमाणित अस्पतालों को बेहतर दरें मिलेंगी।

2. शहर की श्रेणीः और 'श्रेणी के शहरों के लिए अलग–अलग दरें होंगी।

3. अस्पताल का प्रकारः सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों को 15त्न अधिक रेट मिलेगा।

4. वार्ड का प्रकारः जनरल वार्ड और प्राइवेट वार्ड की दरों में 5त्न का अंतर होगा।

अस्पतालों के लिए सख्त निर्देश

स्वास्थ्य मंत्रालय ने साफ कर दिया कि जो अस्पताल 13 अक्टूबर तक नई दरों को स्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें पैनल की सूची से हटा दिया जाएगा (डि–एम्पैनल)। साथ ही, सभी अस्पतालों को 90 दिनों के भीतर नए समझौते पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य होगा।

कर्मचारियों और पेंशनर्स को सीधा फायदा

इस बड़े सुधार के बाद उम्मीद है कि अब पैनल में शामिल अस्पताल ष्टत्र॥स् लाभार्थियों को कैशलेस इलाज देने से मना नहीं कर पाएंगे। इससे लाखों कर्मचारियों और विशेषकर पेंशनर्स को इलाज के लिए तुरंत मोटी रकम का इंतजाम करने की चिंता से मुक्ति मिलेगी और रिफंड की लंबी प्रक्रिया का झंझट भी खत्म हो जाएगा। यह कदम ष्टत्र॥स् प्रणाली को अधिक भरोसेमंद और प्रभावी बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

एयर इंडिया की फ्लाइट से टकराया पक्षी, 158 यात्रियों की जान आई आफत में

चेन्नई ,एअर इंडिया की कोलंबो से चेन्नई आ रही फ्लाइट में आज एक बड़ा हादसा टल गया। मंगलवार को विमान के उतरते समय बर्ड हिट (पक्षी के टकराने) की घटना हुई, जिसके बाद एयरलाइन को अपनी वापसी की उड़ान रद्द करनी पड़ी। घटना के समय विमान में 158 यात्री सवार थे। हवाई अड्डा प्राधिकरण के अनुसार, विमान ने चेन्नई हवाई अड्डे पर सुरक्षित लैंडिंग की और सभी यात्रियों को विमान से सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। अधिकारियों ने बताया कि विमान से पक्षी के टकराने का पता लैंडिंग के बाद निरीक्षण के दौरान चला। इस घटना के तुरंत बाद विमान को उड़ान भरने से रोक दिया गया और एअर इंडिया के इंजीनियरों की टीम ने उसकी विस्तृत जांच शुरू कर दी। यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए एयरलाइन ने चेन्नई से कोलंबो जाने वाली वापसी की उड़ान को रद्द करने का फैसला किया।

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी से 4.30 घंटे हुई पूछताछ

60 करोड़ के फॉड मामले में ईओडब्ल्यू ने दर्ज किए बयान

मुंबई ,मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने 60 करोड़ रुपये की कथित धोखाधड़ी के मामले में अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी का बयान दर्ज किया है। एक अधिकारी के अनुसार, शिल्पा से लगभग 4 घंटे 30 मिनट तक पूछताछ की गई और उनके बयान को आधिकारिक रूप से रिकॉर्ड किया गया।

ईओडब्ल्यू की टीम ने यह पूछताछ शिल्पा शेट्टी के घर पर की। इस दौरान शिल्पा ने अपनी ऐडवर्टाइजिंग कंपनी के बैंक खाते से जुड़े लेनदेन की जानकारी दी और कई दस्तावेज भी पेश किए, जिन्हें अब पुलिस जांच रही है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने बुधवार को शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा को कोई अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया। यह कपल लुकआउट सर्कुलर (रुह्रष्ट) के निलंबन के लिए कोर्ट पहुंचा था ताकि वे थाईलैंड के फुकेत में 2 से 5 अक्टूबर तक की अपनी यात्रा कर सकें। कपल की ओर से वकीलों ने बताया कि उनके पास यात्रा और ठहरने की पूरी बुकिंग है और उन्होंने पहले भी जांच एजेंसियों का सहयोग करते हुए विदेश यात्रा की है। इस केस में 60 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का आरोप है, जो कपल की अब बंद हो चुकी कंपनी से जुड़ा है। डायरेक्टर दीपक कोठारी ने शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि 2015 से 2023 के बीच राज कुंद्रा और शिल्पा शेट्टी ने उन्हें निवेश के लिए प्रेरित किया और उन्होंने करीब 60.48 करोड़ रुपये का निवेश किया। शिल्पा ने इस निवेश पर व्यक्तिगत गारंटी भी दी थी।

जम्मू–कश्मीर के आपदा प्रभावित किसानों को केंद्र सरकार से मिली राहत

नई दिल्ली , केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज कृषि भवन, नई दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जम्मू–कश्मीर के बाढ़ व भूस्खलन प्रभावित किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम–किसान) योजना की 21वीं किस्त अग्रिम जारी की। इस सादे समारोह में केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे, वहीं जम्मू–कश्मीर के कृषि मंत्री श्री जावेद अहमद डार, अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी, किसान

कार्यक्रम से वर्चुअल जुड़े। आज की किस्त के तहत लगभग 8.55 लाख किसानों के बैंक खातों में सीधे 171 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए, जिनमें 85,418 महिला किसान शामिल हैं। जम्मू–कश्मीर के किसानों को पीएम–किसान के तहत अब तक कुल 4,052 करोड़ रु. की सहायता दी जा चुकी है।

इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बाढ़ और अन्य आपदा से प्रभावित जम्मू–कश्मीर के किसानों के साथ केंद्र सरकार, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हुई है, हम सभी प्रभावित किसानों व अन्य लोगों को संकट से पार निकालेंगे, इसी कड़ी में एक कदम पीएम–किसान की किस्त की यह राशि बड़ी राहत है, जिससे किसान अपने आवश्यक कार्य कर सकेंगे। शिवराज सिंह ने कहा कि हम किसी भी किसान को संकट की इस घड़ी में अकेला नहीं छोड़ेंगे।

भारत में कानून है, दादागिरी और गुंडाराज स्वीकार नहीं : किरेन रिजिजू

दार्जिलिंग/कोलकाता , केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने आज पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में भूस्खलन प्रभावित मिरिक का दौरा किया और स्थिति और चल रहे राहत कार्यों का जायजा लिया। केंद्रीय मंत्री के साथ दार्जिलिंग से भाजपा सांसद राजू बिष्ट और राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी भी थे। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने भाजपा सांसद और विधायक पर हुए हमले की भी निंदा की। उन्होंने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम विरला ने पहले ही राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर भारत में कानून है, तो दादागिरी और गुंडाराज स्वीकार नहीं किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय मंत्री का उत्तरी बंगाल का दौरा, जहां मूसलाधार बारिश के बाद हुए भूस्खलन में कम से कम 36 लोगों की मौत हो गई थी, संकट की इस घड़ी में उस क्षेत्र के लोगों की सहायता के लिए केंद्र की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा करने के बाद, केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने कहा, स्थिति गंभीर है और कई लोगों की जान जा चुकी है।

अरविंद केजरीवाल को मिला सरकारी बंगला, हाईकोर्ट की सख्ती के बाद हुआ आवंटन

नई दिल्ली , लंबी कानूनी लड़ाई और केंद्र सरकार के साथ चली तनातनी के बाद आखिरकार आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 95 लोधी एस्टेट स्थित टाइप–ङ्कढ्ढ बंगला आवंटित कर दिया गया है। यह आवास उन्हें बतौर राष्ट्रीय पार्टी के प्रमुख के नाते दिया गया है। यह आवंटन तब हुआ जब दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार को आवास आवंटन में की जा रही देरी पर सख्त टिप्पणी की थी। अदालत ने कहा था कि सरकारी आवासों के वितरण में पारदर्शिता और समानता सुनिश्चित की जानी चाहिए। कोर्ट 'आपझ् की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें पार्टी ने अपने राष्ट्रीय संयोजक के लिए केंद्र सरकार से आवास की मांग की थी। हाईकोर्ट ने 16 सितंबर को सुनवाई के

दौरान केंद्र सरकार के रवैये को टालमटोल करार देते हुए कहा था कि आवास आवंटन की प्रक्रिया किसी विशेष व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि समान अवसर की प्रणाली होनी चाहिए। अदालत ने केंद्र को स्पष्ट किया था कि सरकारी आवास किसी भी व्यक्ति या पद के प्रति भेदभाव के आधार पर नहीं दिया जा सकता। इससे पहले, आम आदमी पार्टी ने 35 लोधी एस्टेट स्थित टाइप–बंगला अरविंद केजरीवाल को देने का प्रस्ताव किया था। यह वही बंगला था जो बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती ने मई में खाली किया था। हालांकि, केंद्र सरकार ने उस बंगले को केजरीवाल के बजाय एक केंद्रीय राज्य मंत्री को आवंटित कर दिया था। इस फैसले के बाद मामला और विवादित हो गया था। इसके बाद, हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार को फटकार लगाते हुए कहा था कि वह अपने आवंटन की प्राथमिकता और प्रक्रिया के रिकॉर्ड अदालत के समक्ष प्रस्तुत करे और यह भी स्पष्ट करे कि आखिर किस आधार पर अरविंद केजरीवाल को प्राथमिकता सूची में पीछे रखा गया।

सम्पादकीय

मिलावटखोरी पर वृहद अभियान

देवभूमि उत्तराखंड में मिलावट खोरी को रोकने के लिए सरकार ने युद्ध स्तर पर कार्रवाई शुरू कर दी है जो कि एक स्वागत योग्य कदम है। पूरे प्रदेश में मुख्यमंत्री के निर्देशों पर जगह–जगह कार्रवाई की जा रही है जिसके तहत खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर उन्हें सैंपलिंग के लिए भेजा जाएगा। खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त गली मोहल्ले में बिकने वाले पेय पदार्थ तथा टेलीकॉम से भी सरकार के इस अभियान का हिस्सा रहेंगे। पिछले कुछ समय से मिलावट खोरी के कई मामले प्रदेश में सामने आए हैं जिनमें अधिकांश मामले खास तौर पर विभिन्न त्योहारों के समय देखने को मिलते हैं। इनमें नकली पनीर, मावा, कुट्टू का आटा, दूध आदि खाद्य सामग्रियां शामिल है। कुछ मौके पर दूसरे राज्यों से उत्तराखंड में भेजे जाने वाले नकली मावा व पनीर की बड़ी खेप पकड़ी गई है लेकिन यह आज तक पता नहीं चल पाया कि यह मिलावटी पदार्थ किन स्थानों से भेजे गए और इनका उत्पादक स्थल क्या है? यहां तक की जो सैंपल विभाग द्वारा लिए गए उनकी रिपोर्ट कभी भी ना तो सोशल मीडिया के माध्यम से और ना ही दूसरे अन्य माध्यमों से जनता तक सार्वजनिक की गई। यानी कि सैंपल लेने के बाद कार्रवाई किस स्तर पर पहुंची या हमेशा से ही एक रहस्य रहा है। इस प्रकार की कार्रवाई महज एक औपचारिकता एवं दिखावा ही साबित हो रही है क्योंकि जब तक मिलावटखोरों के पहले पायदान पर विभाग नहीं पहुंचेगा तब तक मिलावट खोरी का यह काला कारोबार थमने वाला नहीं है। राज्य सरकार ने पूरे प्रदेश में अभियान तो छेड़ा है लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत ऐसे लोगों तक पहुंचने की है जो नकली सामान बाजार में उपलब्ध करा रहे हैं। महज वस्तुओं की सैंपलिंग और उन्हें जब्त करने से कुछ होने वाला नहीं है क्योंकि समान जब तो भले ही जब्त कर लिया जाए लेकिन पूरा बाजार मिलावटखोरों के जाल में फंसा हुआ है। हालांकि इस अभियान के तहत उपभोक्ताओं को जागरूक करने की भी कोशिश की जा रही है जो बेहद जरूरी है। इसके तहत न केवल विक्रेता को बल्कि खरीदारों को भी इस बात के लिए प्रेरित किया जा रहा है कि वह सभी खाद्य पदार्थों की अच्छी तरह से जांच परख कर ही उनकी खरीदारी करें। विभाग के साथ–साथ उपभोक्ताओं का भी एक कर्तव्य है कि वह जिस वस्तु के लिए पैसा दे रहे हैं उसकी कसौटियों को अवश्य पर परखें। सड़कों और विभिन्न ढाबों रेस्टोरेंट में बिकने वाले सामान में भी विभाग को नजर रखनी होगी क्योंकि जो कुछ भी उपभोक्ताओं को स्वाद के नाम पर परोसा जा रहा है वह कहीं से भी स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेयस्कर नहीं है। फास्ट फूड के नाम पर दूषित और केमिकल परोसे जा रहे हैं और सबसे पहला कदम ऐसे लोगों पर लगाम कसना होगा। बहरहाल सरकार ने एक बड़ा अभियान शुरू किया है जो आपसे समन्वयी के साथ ही अंजाम तक पहुंचाया जा सकता है। इसके अलावा मिलावटखोरों के सरगनाओ को बेनकाब करना भी बेहद जरूरी है।

एसआईआर के कई सवाल अब भी अनसुलझे

अजीत द्विवेदी

बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर की प्रक्रिया पूरी हो गई है। चुनाव आयोग ने अंतिम मतदाता सूची जारी कर दी है, जिसमें करीब सात करोड़ 42 लाख मतदाताओं के नाम हैं। एसआईआर शुरू होने से पहले बिहार में कुल मतदाताओं की संख्या सात करोड़ 89 लाख थी, जो अब घट कर सात करोड़ 42 लाख हो गई है। इस आधार पर कह सकते हैं कि सिर्फ 47 लाख नाम घटे हैं। लेकिन असल में करीब 69 लाख नाम कटे हैं। यह सात करोड़ 42 लाख की जो संख्या दिख रही है उसमें साढ़े 21 लाख नाम ऐसे हैं, जो नए जोड़े गए हैं। सो, चुनाव आयोग ने अपनी ओर से एसआईआर का काम पूरा कर दिया है। अगले कुछ दिन में एक पूरक सूची आ सकती है, जिसमें कुछ और नए नाम होंगे। लेकिन सवाल है कि क्या एसआईआर की प्रक्रिया पूरी होने से सारे सवालों के जवाब मिल गए? इसको लेकर जितने संदेह थे, सब दूर हो गए? क्या अब सुप्रीम कोर्ट में इससे जुड़ा मामला बंद हो जाएगा या वहां नए सवाल खड़े होंगे?ध्यान रहे एसआईआर का मामला अभी सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। सर्वोच्च अदालत ने मतदाता के सत्यापन के एक दस्तावेज के तौर पर आधार को शामिल करने और जिन लोगों के नाम कटे थे उनके ऑनलाइन आवेदन लेने का जिस दिन आदेश दिया था उस दिन कहा था कि अगर गड़बड़ी मिली तो वह पूरी प्रक्रिया को रद्द कर देगी। पता नहीं अदालत की आगे की सुनवाई में क्या होगा लेकिन ऐसा लग रहा है कि एसआईआर की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद भी अनेक सवाल अनसुलझे रह गए हैं। इनका जवाब इसलिए जरूरी है क्योंकि चुनाव आयोग अब पूरे देश में एसआईआर की प्रक्रिया शुरू करने जा रहा है और पश्चिम बंगाल से लेकर केरल तक इसका विरोध तेज हो गया है। केरल में तो विधानसभा में सर्वसम्मति से एसआईआर के खिलाफ प्रस्ताव पास किया गया है। सो, कह सकते हैं कि एसआईआर की एक परीक्षा अभी और होनी है।बहरहाल, अब बिहार के एसआईआर के आंकड़े को देखने और उसके निहितार्थों को समझने की कोशिश करते हैं। चुनाव आयोग ने जुलाई के अंत में जो मसौदा सूची जारी की थी उसमें 7.24 करोड़ नाम थे और 65 लाख 64 हजार नाम काट दिए गए थे। उसको लेकर बड़ा विवाद हुआ लेकिन आयोग अपनी बात पर अड़ा रहा। आयोग ने कहा कि इसमें 22 लाख से कुछ ज्यादा लोग ऐसे हैं, जिनका निधन हो गया है, 36 लाख से कुछ ज्यादा लोग स्थायी रूप से शिफ्ट कर गए हैं और साढ़े छह लाख के करीब लोगों के नाम एक से ज्यादा जगहों पर थे। यह हिसाब था 65 लाख 64 हजार लोगों के नाम कटने का। अब नाम कटने का आंकड़ा 69 लाख का है। सवाल है कि साढ़े तीन लाख के करीब जो नए नाम कटे हैं, वह किन लोगों के हैं? चुनाव आयोग ने इनको नॉट रिकमेंडेड की श्रेणी में रखा था और नोटिस जारी किया था। चुनाव आयोग ने खुद ही बताया है कि बिना पक्ष सुने किसी का नाम नहीं काटा जाएगा। सो, जाहिर है कि इन साढ़े तीन लाख लोगों का पक्ष सुन कर इनका नाम काटा गया होगा। तो अब सवाल है कि इनके दस्तावेजों में क्या गड़बड़ी थी? क्या इनके पास आधार भी नहीं था? या आधार था लेकिन आयोग को उसकी प्रामाणिकता पर संदेह था?

ध्यान रहे अनेक लोगों की कहानियां आ रही हैं कि उनके पास सिर्फ आधार था और सुप्रीम कोर्ट के आदेश के दम पर वे आधार के जरिए मतदाता बन गए। अगर साढ़े तीन लाख लोगों के पास आधार भी नहीं था या आधार था तो संदिग्ध था तो चुनाव आयोग ने उनका क्या किया? क्या आयोग ने केंद्रीय गृह मंत्रालय को कोई जानकारी भेजी है? क्या उसने इन लोगों को संदिग्ध नागरिक की श्रेणी में रखा है? अगर ऐसा भी है कि बहुत से लोगों ने फॉर्म भरा और नोटिस आने के बाद गायब हो गए तो उनकी भी जानकारी निश्चित रूप से केंद्रीय गृह मंत्रालय की दी जानी चाहिए, क्या आयोग ने ऐसा किया है? इन सवालों के जवाब जरूरी हैं अन्यथा आगे जिन राज्यों में एसआईआर होगा वहां भी मसौदा सूची में नाम होने के बावजूद लाखों लोगों के नाम अंतिम सूची से बाहर हो जाएंगे और कोई कुछ नहीं कर पाएगा। बिहार में जिन साढ़े तीन लाख लोगों के नाम मसौदा सूची में होने के बावजूद कटे हैं या तो वे विदेशी व संदिग्ध नागरिक हैं और देश की सुरक्षा के लिए खतरा हैं या इसी देश के नागरिक हैं लेकिन किसी तकनीकी आधार पर उनका नाम काट कर उनको वोट देने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है? ये दोनों स्थितियां चिंताजनक हैं।इसी से जुड़ा एक सवाल यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद चुनाव आयोग ने आधार को किस रूप में लिया? अगर किसी नागरिक की ओर से एकमात्र पहचान पत्र के तौर पर आधार पेश किया गया तो उसे आयोग ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया? उसे सहज रूप से स्वीकार कर लिया गया या संदिग्ध बता कर किसी और दस्तावेज की मांग की गई? इस सवाल का जवाब भी इसलिए जरूरी है क्योंकि आगे जिन राज्यों में एसआईआर होगा वहां ज्यादातर लोग आधार ही पेश करेंगे। इसके अलावा एक सवाल यह है कि मसौदा सूची जारी होने के बाद चुनाव आयोग के सामने जो दावे और आपत्तियां आई थीं उनमें से कितने को और कैसे निपटाया गया? यह सवाल इसलिए है क्योंकि सुप्रीम कोर्ट तक एसआईआर का मुकदमा लड़ने वाले लोग बता रहे हैं कि आयोग के सामने जो आपत्तियां आई थीं उनमें 57 फीसदी ऐसी थीं, जिसमें लोगों ने अपना नाम काटने को कहा था। सवाल है कि ऐसा कैसे हो सकता है कि जिन लोगों ने मतगणना प्रपत्र भरा और मसौदा सूची में नाम आने के बाद खुद ही नाम कटवाने पहुंच गए? इसी तरह दावा किया जा रहा है कि सात सौ लोगों ने अपने को विदेशी बता कर नाम काटने को कहा। यह कैसे हो सकता है? उनका फॉर्म कैसे स्वीकार हुआ और किन दस्तावेजों के आधार पर हुआ? सबसे मजेदार दावा यह है कि 28 लोगों ने दस्तखत करके आपत्ति दर्ज कराई कि वे मर चुके हैं। क्या ऐसा होना संभव है?एसआईआर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद चुनाव आयोग की ओर से जारी अंतिम मतदाता सूची में 21.53 लाख लोगों के नाम जोड़े जाने की बात कही गई है। चुनाव आयोग ने कहा कि उसने 7.24 करोड़ की मसौदा सूची में से 3.66 लाख नाम और काटे, जबकि 21.53 लाख नाम जोड़े तो अब कुल संख्या 7.42 करोड़ हो गई। सवाल है कि जब खुद चुनाव आयोग ने एक सितंबर को दावे व आपत्तियां लेने की तारीख समाप्त होने के बाद कहा कि उसे 16.93 लाख नए नाम जोड़ने का आवेदन मिला है तो यह संख्या बढ़ कर 21.53 लाख कैसे हो गई? यह साढ़े चार लाख से ज्यादा नाम कहां से आए, जबकि आयोग ने कहा कि एक सितंबर के बाद कोई आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा? विपक्ष की ओर से लगाए जा रहे आरोपों और उठाई जा रही आशंकाओं को दूर करने के लिए इन सवालों के जवाब देना जरूरी है।

भारतीय युवाओं की आकांक्षाओं पर हमला

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप रोजाना कुछ न कुछ ऐसा कर रहे हैं, जिससे भारत सरकार और भारतीय निशाने पर आ जाते हैं। ट्रंप आड़ तो अपने देश के युवाओं के रोजगार बढ़ाने की ले रहे हैं, लेकिन हमला भारतीय युवाओं की आकांक्षाओं पर कर रहे हैं। अभी अमेरिका से भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क का मामला सुलझा भी नहीं है कि ट्रंप ने एच1बी वीजा का बम गिरा दिया है। एच1बी वीजा शुल्क को सालाना 100,000 अमेरिकी डॉलर तक बढ़ा दिया है। इस कदम से अमेरिका में काम करने वाले भारतीय पेशेवरों, जिनमें बड़ी संख्या में आईटी से जुड़े हैं, पर गंभीर असर पड़ेगा। भारतीय आईटी कंपनियों के शेयरों में आई गिरावट ने असर की झांकी दिखा दी है। अमेरिका का दावा है कि एच1बी वीजा का बहुत दुरुपयोग होता है।

इसकी शुरुआत उन उच्च कुशल कामगारों को अमेरिका में आने की अनुमति देने के लिए की गई थी, जो उन क्षेत्रों में काम करते हैं, जहां अमेरिकी काम नहीं करते। 100,000 डॉलर के शुल्क के बाद सुनिश्चित होगा कि वास्तव में कुशल लोग ही अमेरिका आएं और अमेरिकी कामगारों का स्थान नहीं लें। ट्रंप का तर्क है कि रोजगार आधारित ग्रीन कार्ड कार्यक्रम के तहत प्रति वर्ष 281,000 लोगों को अमेरिका में प्रवेश मिलता है, तथा ये लोग औसतन प्रति वर्ष 66,000 अमेरिकी डॉलर कमाते हैं तथा सरकारी सहायता कार्यक्रमों का भारी लाभ उठाते हैं। हम इसे बंद करने जा रहे हैं। इस कदम का उन भारतीय कर्मचारियों पर गहरा असर पड़ेगा जिन्हें प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां और अन्य कंपनियां एच1बी वीजा पर नियुक्त करती हैं। ये वीजा तीन साल के लिए वैध होते हैं, जिन्हें तीन साल के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है। आदेश के कुछ घंटों बाद शनिवार को अमेरिका में एच1बी वीजा पर रह रहे भारतीयों में भ्रम व चिंता व्याप गई। कई भारतीयों ने भारत यात्रा की अपनी योजना रद्द कर दी। जो भारत आए हुए थे उनमें जल्द से जल्द लौटने की मारामारी मच गई। हालांकि बाद में कहा गया कि यह शुल्क नये आवेदकों पर ही लागू होगा। पुराने वीजा धारक प्रभावित नहीं होंगे। कांग्रेस पार्टी अमेरिका के फैसले के बाद प्रधानमंत्री मोदी पर हमलावर हो गई। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने तल्ख टिप्पणी की कि आपके जन्मदिन पर फोन कॉल के बाद आपको जो जवाबी तोहफा मिला है, उससे भारतीय नागरिकों को दुख हुआ है। गले मिलना, खोखले नारे लगवाना और संगीत कार्यक्रम करवाना कोई विदेश नीति नहीं है। हमें अपने हितों के लिए गंभीर होना होगा।

इनसे छीनो, उनको दो!

हाल के वर्षों में बिजली की किल्लत घटी है और अच्छी सड़कें बनी हैं। मगर बिजली सस्ती नहीं हुई है और टोल–टैक्स से सड़क परिवहन महंगा बना हुआ है। ये सभी लागतें आखिरकार उत्पाद की कीमत में ही शामिल होती हैं। महाराष्ट्र सरकार ने व्यापारिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए बिजली पर अतिरिक्त कर को दोगुना कर दिया है। इस तरह ऐसे उपभोक्ताओं को अब प्रति यूनिट बिजली के उपभोग पर 9 रुपये 90 पैसे की अधिक रकम चुकानी होगी। जाहिर है, ये बड़ी वृद्धि है। इस बढ़ोतरी के जरिए राज्य सरकार सालाना 834 करोड़ रुपये जुटाएगी। देवेंद्र फड़णवीस सरकार ने कहा है कि इस रकम का इस्तेमाल किसानों को सोलर पंप देने के लिए किया जाएगा। राज्य सरकार के मुताबिक प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत किसानों को सोलर पंप दिए जाएंगे, मगर इसके लिए राजकोष में पैसा नहीं है। पैसे की कमी का कारण कल्याण योजनाओं पर बढ़े बजट को बताया गया है। साधारण भाषा में कहें, तो विधानसभा चुनाव से पहले राज्य सरकार ने रेवड़ियों को जो झड़ी लगाई थी, उस कारण आगे और कल्याण करने की उसकी क्षमता नहीं बची। तो अब उद्योगपतियों और कारोबारियों पर बोझ डालने का फैसला किया गया है। 'इनसे छीनो, उनको दोः का यह मॉडल कितना हानिकारक है, इसका अंदाजा इसके नतीजों के गंभीर विश्लेषण से ही लगाया जा सकता है। यह शिकायत पहले से ही है कि भारतीय उत्पाद विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा में इसलिए पिछड़ जाते हैं, क्योंकि लागत ज्यादा होने के कारण वे महंगे पड़ते हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर लागत का महंगा होना इसका एक बड़ा पहलू है। भारत में हाल के वर्षों में बिजली की किल्लत घटी है और अच्छी सड़कें बनी हैं। मगर बिजली सस्ती नहीं हुई है और टोल–टैक्स से सड़क परिवहन महंगा बना हुआ है।

अब रावण नहीं सच जलता है!

श्रुति व्यास

समय बहुत शोरगुल से भरा है, ख़ासतौर से धार्मिक अनुष्ठानों–पर्वो से। त्योहार अब केवल उल्लास–उमंग के नहीं रहे, वे अब अपनी पहचान के प्रदर्शन हैं। राष्ट्रवाद ने धर्म को ऐसी दूसरी खाल की तरह पहना है कि दोनों में भेद करना भी कठिन है। इस संगम को मैंने हाल में कागज़ और रंग में देखा। दिल्ली के तिलक नगर–टिटरपुर की पुतलों की मंडी में,जिसे चाहें तो लंका का बाज़ार माने। सड़क किनारे हर आकार के रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण खड़े थे– विशालकाय पुतले, गुड्डे जैसे छोटे पुतले, चमकीली आँखों और दाँत दिखाती मुस्कुराहटों वाले चेहरे। गुलाबी, चाँदी और नारंगी की चमकती परतों में वे खेलपूर्ण–मनोरंजक लग रहे थे तो डरावने भी–जैसे सड़क किनारे कोई पौराणिक मेला सज गया हो। पर मेरी नज़र ठहर गई मूँछों पर। गहरी, लंबी मूँछें–कहीं एके–47 के चारों ओर लिपटी हुई, कहीं उन पर लिखा ऑपरेशन सिंदूर कामयाब। सो दशहरा भी राष्ट्रवाद की नई परत ओढ़ चुका है। सिफ़ पौराणिक असुर रावण गी नहीं जलता, बल्कि नए दुश्मन और ताज़ा भिडंत के बतौर प्रतीक भी अब जलता है। इन पुतलों को बनाने वालों को सरकार ने नहीं आदेश दिया था कि वे ये नारे लिखें। पर जब मैंने एक कारीगर से पूछा तो उसने कंधे उचकाते हुए कहाः देश का मूड ऑपरेशन सिंदूर में चल रहा है। और वह ग़लत नहीं था। युद्ध के इस मौसम के बाद देश का मूड सचमुच इसी ऑपरेशन में डूबा है। इसे हमने तब और साफ़ देखा जब सरकार ने एशिया कप में भारतझपाकिस्तान मैच को हरी झंडी दी, लेकिन सड़क का मूड इसके उलट था– बहिष्कार की ओर। नारा वही गूँजता रहाः खून और पानी साथ नहीं बह सकते। अब यह त्योहारों में भी उतर आया है। जब राष्ट्रीय मूड इतना आवेशपूर्ण हो, तो क्यों न रावण को भी उसके साथ रंग दिया जाए? पुतला जलाना अब अच्छाई पर बुराई की जीत नहीं, बल्कि सामूहिक गुस्से को बाहर निकालने का एक लाइसेंस प्राप्त अवसर है।

धर्म हमेशा प्रतीकों की भाषा देता रहा है। पर आज वे प्रतीक जानबूझकर राष्ट्रवाद की पटकथा में लिखे जा रहे हैं। यही चिंता है। यह दुर्घटना नहीं, यह सोची–समझी समाहिति है। और इसमें भय है, खतरा है। क्योंकि जब राजनीति राष्ट्रवाद में घुलती है, तब भी लगाम राज्य के हाथ में रहती है। लेकिन जब राष्ट्रवाद धर्म में घुल जाता है, तो वह अनियंत्रित हो जाता है। इतिहास गवाह है–भाषा, राष्ट्रवाद और धर्म–ये तीन हमेशा किसी समाज को आकार देने और उकसाने की सबसे मज़बूत शक्तियाँ रही हैं। क्योंकि वे सिफ़ नियंत्रण से नहीं, बल्कि हम कौन हैं और हमें मिलकर क्या होना है–इस कहानी को गढ़ती हैं। धर्म अपने श्रेष्ठ रूप में आशा और एकजुटता ला सकता है। लेकिन जैसे ही उसे राष्ट्रवाद की सेवा में झोंक दिया जाता है तो वह भविष्य की ओर संकेत करना छोड़ देता है और समाज को स्थायी वर्तमान में जकड़ देता है–हमेशा सशंकित, आक्रामक, युद्धोन्मुख। हमने यह पैटर्न देखा है–नाज़ी जर्मनी में, जहाँ राष्ट्रवाद नस्ली धर्म बन गया और चर्च सत्ता के औज़ार। ईरान में, जहाँ इस्लामी गणराज्य ने धर्म को राजनीति की अकेली भाषा बना दिया। श्रीलंका में, जहाँ सिंहला–बौद्ध राष्ट्रवाद ने दशकों का रक्तपात कराया। और हमारे पड़ोस पाकिस्तान में, जहाँ राज्य पर सवाल उठाना इस्लाम पर सवाल उठाना है–और नतीजा असहिष्णुता तथा स्थायी दुश्मनी। तो क्या हम भी अब उसी राह पर बढ़ रहे हैं? भारत अब अपने पड़ोसी जैसा होता जा रहा है। राम मंदिर का भूमिपूजन राष्ट्रवाद से इस तरह जोड़ा गया कि जिन छतों पर भगवा झंडा नहीं लहराया, वे राष्ट्रविरोधी कहलाए। कोविड के दौरान, दीया न जलाना आस्था का मामला नहीं रहा, बल्कि देशद्रोह बन गया। अब यह पटकथा और गाढ़ी हो गई है। नवरात्रि सिफ़ व्रत और पूजन से नहीं आती, बल्कि आदेशों से–कसाईखानों को नौ दिन बंद रखने के आदेश जैसे। बीजेपी शासित राज्यों में बुलडोज़र दैवीय न्याय के औज़ार बन जाते हैं–मुस्लिम घर ढहाए जाते हैं, और बहुसंख्यक भीड़ इसे धर्म और राष्ट्रवाद के एक ही रंगमंच में देखती है।

प्रियंका चोपड़ा ने मुंबई को कहा अलविदा

भारतीय अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने मुंबई को अलविदा कह दिया है। वह दो दिनों तक मुंबई में रहने के बाद अमेरिका लौट गई हैं। एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मुंबई में बिताए अच्छे पलों को याद किया है। फैंस को दुर्गा पंडाल में प्रियंका चोपड़ा का लुक काफी पसंद आया। प्रियंका चोपड़ा बनारसी पैटर्न के साथ पर्पल कलर के सूट में दिखीं। एक्ट्रेस ने माथे पर बिंदी और मांग में सिंदूर लगा रखा था। एक्ट्रेस का देसी लुक फैंस के दिल को भा गया। प्रियंका चोपड़ा ने इंस्टाग्राम पर एक मुंबई टूर वीडियो पोस्ट किया। वीडियो में एक्ट्रेस पहले अपने स्किनकेयर और मेकअप के बारे में बात कर रही है, वहीं कई स्थानों के साथ वह मां दुर्गा के पंडाल में भी नजर आईं। वीडियो में उन्होंने मुंबई में बिताए दो दिनों की यादें कैमरे में कैद कीं।एक्ट्रेस ने वीडियो के कैप्शन में लिखा,अलविदा मुंबई! वापस आना हमेशा बहुत अद्भुत होता है, भले ही यह एक मिनट के लिए ही क्यों न हो। उत्सव मना रहे सभी लोगों को दशहरा की शुभकामनाएं। दोबारा आने का वेट करें.. ।प्रियंका ने एक्ट्रेस नीलम उपाध्याय को भी दिल से शुक्रिया कहा। उन्होंने लिखा, जब पति मदद के लिए आसपास नहीं थे तो आप थे।

वर्क फ्रंट की बात करें तो प्रियंका को हॉलीवुड एक्शन–कॉमेडी हेड्स ऑफ स्टेट में देखा गया था। फिल्म अमेजन प्राइम पर मौजूद है। एक्ट्रेस एक साथ कई फिल्मों की शूटिंग कर रही है, जो हॉलीवुड और बॉलीवुड दोनों हैं।

चांदनी बार सीच्ल कास्टिंग , तृप्ति, शरवरी और अनन्या मानी जा रही हैं टॉप कंटेंडर्स

फिल्ममेकर मधुर भंडारकर की चांदनी बार, जो 2001 में रिलीज़ हुई थी, ने हाल ही में अपनी 24वीं वर्षगाँठ मनाई। इस मौके पर इसके सीच्ल का ऐलान किया गया है। समाज की कटु सच्चाइयों और मुंबई के डांस बार की ज़िंदगी को बिना किसी लाग–लपेट के दिखाने वाली इस क्लासिक फिल्म ने तब्बू को राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया था और भारतीय सिनेमा को एक नया आयाम दिया था। अब चांदनी बार री–ओपन्स, जिसे संदीप सिंह प्रोड्यूस करेंगे और अजय बहल डायरेक्ट करेंगे, एक बार फिर उसी संवेदनशीलता के साथ शहर की कड़वी हकीकत को सामने लाने का वादा कर रही है। लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा इस समय फिल्म की लीड कास्टिंग को लेकर है। यह किरदार, जिसे तब्बू ने आइकॉनिक मुमताज़ के रूप में निभाया था, अब किसे मिलेगा, यही सबसे बड़ा सवाल है। बताया जा रहा है कि तीन युवा और टैलेंटेड अभिनेत्रियाँ रेस में हैं, जिसमें शरवरी वाघ, अनन्या पांडे और तृप्ति डिमरी शामिल हैं। इंडस्ट्री में बहस छिड़ी हुई है कि इस इमोशन–ड्रिवन रोल के लिए सही चेहरा कौन होगा। क्या यह गहन किरदार निभाने की क्षमता रखने वाली शरवरी वाघ को मिलेगा?

भारत के खिलाफ वनडे और टी20 सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम की घोषणा

नई दिल्ली , क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने भारत के विरुद्ध वनडे सीरीज के तीनों मुकाबलों और टी20 सीरीज के शुरुआती दो मैचों के लिए अपनी टीम का ऐलान कर दिया है। दोनों ही फॉर्मेट में मिचेल मार्श ऑस्ट्रेलियाई टीम की कमान संभालेंगे। वहीं, चोट से उबर रहे पैट कमिंस को आराम देने का फैसला लिया गया है। ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीम में जेवियर बार्टलेट, एलेक्स कैरी, कूपर कोनोली, बेन ड्वार्शिस, ट्रेविस हेड, मिचेल स्टार्क और एडम जांपा जैसे खिलाड़ियों को मौका दिया गया है, जबकि आरोन हार्डी, मार्नस लाबुशेन और मैथ्यू कुहनेमन को इस टीम से बाहर रखा गया है। दूसरी ओर, शेफील्ड शील्ड मैच के चलते टी20 टीम में विकेटकीपर

एलेक्स कैरी शुरुआती मैच नहीं खेल सकेंगे। वहीं, कलाई में फ्रैक्चर के चलते ग्लेन मैक्सवेल इस टीम से बाहर हैं।

ऑस्ट्रेलिया ने वनडे विश्व कप 2027 को मद्देनजर रखते हुए मैथ्यू रेनशॉ और मिचेल ओवेन को टीम में शामिल किया है, ताकि ये बल्लेबाज मिडिल ऑर्डर को मजबूती दे सकें।

चयन समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बेली के मुताबिक, टी20 टीम को वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए एक साथ रखा गया है, लेकिन कुछ खिलाड़ी एशेज सीरीज और शेफील्ड शील्ड खेलेंगे, जिसके तहत कैमरून ग्रीन को टी20 टीम में शामिल नहीं किया गया।

भारत–ऑस्ट्रेलिया की टीमें 19–25 अक्टूबर के बीच पर्थ, एडिलेड और सिडनी में तीन वनडे मुकाबलों की सीरीज खेलेंगी, जिसके बाद 29 अक्टूबर से 8 नवंबर के बीच कैनबरा, मेलबर्न, होबार्ट, गोल्ड कोस्ट और ब्रिस्बेन में पांच टी20 मुकाबले खेले जाने हैं।

ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीमः मिचेल मार्श (कप्तान), जेवियर बार्टलेट, एलेक्स कैरी, कूपर कोनोली, बेन ड्वार्शिस, नाथन एलिस, कैमरून ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रेविस हेड, जोश इंगलिस, मिचेल ओवेन, मैथ्यू रेनशॉ, मैथ्यू शॉर्ट, मिचेल स्टार्क और एडम जांपा।

शाहरुख खान बने दुनिया के सबसे अमीर एक्टर

बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान आधिकारिक रूप से अरबपति की लिस्ट में शामिल हो गए हैं। फिल्म उद्योग में 33 साल बिताने के बाद उनकी कुल संपत्ति अब 1.4 अरब डॉलर (12,490 करोड़ रुपए) है। बुधवार को जारी हुई हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 से इस बात का खुलासा हुआ है।

किंग खान अब भारत के सबसे अमीर अभिनेता ही नहीं, दुनिया के सबसे अमीर एक्टर भी बन गए हैं। एम3एम हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 के अनुसार, शाहरुख खान आधिकारिक तौर पर अरबपति क्लब में शामिल हो गए हैं। उनकी संपत्ति टेलर स्विफ्ट (1.3 बिलियन डॉलर), अर्नोल्ड श्वार्जनेगर (1.2 बिलियन डॉलर), जेरी सीनफील्ड (1.2 बिलियन डॉलर) और सेलेना गोमेज (720 मिलियन डॉलर) सहित कई अंतरराष्ट्रीय सेलेब्स से अधिक हो गई है। शाहरुख खान की नेट वर्थ को बढ़ाने में उनके प्रोडक्शन हाउस रेड चिलीज एंटरटेनमेंट का हाथ है। इसकी स्थापना 2002 में हुई थी, जिसने चेन्नई एक्सप्रेस, रईस और पठान जैसी कई ब्लॉकबस्टर फिल्में बनाई हैं।

1 दिसंबर से लंका प्रीमियर लीग की शुरुआत, भारतीय खिलाड़ी लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली ,लंका प्रीमियर लीग (एलपीएल) का छठा संस्करण 1 से 23 दिसंबर के बीच खेला जाएगा, जिसमें भारतीय खिलाड़ी भी हिस्सा लेने जा रहे हैं। ऐसे में फैंस इस टी20 लीग से जबरदस्त रोमांच की उम्मीद कर रहे हैं। पहली बार लंका प्रीमियर लीग में भारतीय क्रिकेटर हिस्सा लेंगे, जिनके नाम जल्द ही घोषित किए जाएंगे। माना जा रहा है कि भारतीय खिलाड़ियों के जुड़ने से इस लीग की लोकप्रियता में इजाफा होगा। लंका प्रीमियर लीग के इस संस्करण में कुल 24 मैच खेले जाएंगे। इस दौरान 20 लीग मैच और 4 नॉकआउट मुकाबले होंगे।

यह सभी मुकाबले कोलंबो के आर प्रेमदासा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, कैंडी के पल्लेकेले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम और दांबुला के रंगिरी दांबुला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाने हैं। इस टूर्नामेंट में पांच फ्रेंचाइजी हिस्सा लेने जा रही हैं।

भारत से हार का डबल झटका, पाकिस्तानी बल्लेबाज को ये हरकत पड़ी महंगी, आईसीसी ने दी कड़ी सजा

कोलंबो ,आईसीसी महिला विश्व कप 2025 में पाकिस्तानी क्रिकेट टीम का निराशाजनक प्रदर्शन जारी है। भारत के खिलाफ रविवार को मिली करारी शिकस्त के बाद अब टीम की स्टार बल्लेबाज सिदरा अमीन पर आईसीसी ने आचार संहिता के उल्लंघन के लिए कार्रवाई की है। सिदरा को मैच के दौरान गुस्से में अपना बल्ला मैदान पर पटकने के लिए यह सजा सुनाई गई है।

कोलंबो के आर. प्रेमदासा स्टेडियम में रविवार, 5 अक्टूबर को भारत और पाकिस्तान के बीच विश्व कप का अहम मुकाबला खेला गया था। भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान को 248 रनों का लक्ष्य दिया था। जवाब में पाकिस्तानी टीम बिखर गई और केवल 159 रनों पर ढेर हो गई। पाकिस्तान की ओर से एकमात्र अनुभवी बल्लेबाज सिदरा अमीन ने ही संघर्ष किया और 81 रनों की शानदार पारी खेली।

मैच के 40वें ओवर में जब सिदरा भारतीय स्पिनर स्नेह राणा की गेंद पर आउट हुईं, तो वह अपनी हताशा पर काबू नहीं रख सकीं। टीम की हार और अपने शतक से चूकने की निराशा में उन्होंने पवेलियन लौटते समय गुस्से में अपना बल्ला जोर से मैदान पर पटक दिया। उनकी यह हरकत मैदान पर लगे कैमरों में कैद हो गई।मैच के अगले दिन, सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (द्रुष्टष्ट) ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि सिदरा अमीन ने आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2.2 का उल्लंघन किया है, जो क्रिकेट उपकरणों के दुरुपयोग से संबंधित है। मैच रेफरी ने सिदरा की इस हरकत को लेवल–1 का अपराध माना।

सजा के तौर पर सिदरा को आधिकारिक फटकार लगाई गई है और उनके खाते में एक डिमेरिट पॉइंट जोड़ दिया गया है। हालांकि, लेवल–1 का अपराध होने के कारण उनकी मैच फीस नहीं काटी गई है। यह हार और सजा पाकिस्तानी टीम के लिए एक दोहरे झटके की तरह है।

संक्षिप्त समाचार

विशेष सुधार योजना से बेहतर होगें बोर्ड परीक्षा के परिणाम

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिले में कमजोर प्रदर्शन करने वाले स्कूलों के लिए विशेष सुधार योजना बनाई जाएगी। डीएम ने बताया कि बेहतर परिणाम लाने के साथ ही कमजोर प्रदर्शन वाले स्कूलों में भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां विशेष शैक्षिक सुधार योजना लागू की जा रही है। बताया कि छात्र-छात्राओं की तैयारियों को और मजबूत बनाने के लिए आगामी महीनों में तीन अतिरिक्त टेस्ट आयोजित किए जाएंगे। साथ ही मुख्य शिक्षा अधिकारी को न्यून परिणाम रहने वाले स्कूलों में विशेष निगरानी बनाने के निर्देश दिए गए है। जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया के निर्देश पर हाईस्कूल व इंटरमीडिएट स्तर के स्कूलों को चिन्हित कर प्रथम चरण में परीक्षा परिणामों का विश्लेषण किया गया है। ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां विशेष शैक्षिक सुधार योजना लागू की जा रही है। डीएम ने बताया कि बोर्ड परीक्षा परिणामों का विश्लेषण करने में सामने आया था कि जिले के कुछ स्कूलों में बोर्ड परीक्षार्थियों के प्रदर्शन में निरंतर कमी आ रही है। बताया कि जिले में बोर्ड परीक्षाओं में कमी लाने वाले हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के छात्रों का मासिक परीक्षा का मूल्यांकन किया गया। परीक्षा मूल्यांकन के लिए सभी ब्लाकों के खंड शिक्षाधिकारियों को नामित किया गया था। इसके साथ ही डायट विशेषज्ञों और अन्य स्कूलों के शिक्षकों, खंड शिक्षाधिकारियों की समिति भी बनाई गई थी। जिनके द्वारा केंद्रीकृत परीक्षाएं आयोजित की गई। इसके बाद ग्रेडिंग के आधार पर सूची जारी की गयी।

सेवानिवृत्त असिस्टेंट कमांडेंट जुयाल ने थामा हिमालय क्रांति पार्टी का दामन

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित, रैबासी कल्याण संस्था के संस्थापक एवं निदेश-ाक और कोट ब्लाक के बालमणा गांव निवासी सेनि असिस्टेंट कमांडेंट रवींद्र प्रसाद जुयाल ने हिमालय क्रांति पार्टी का दामन थाम लिया है। कहा कि मैं अपनी पूरी क्षमता, अनुभव और समय को जनसेवा, संगठन विस्तार और नीति-निर्माण में समर्पित करूंगा। कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम सबके सामूहिक प्रयास, निष्ठा और पारदर्शी नेतृत्व से उत्तराखंड को राष्ट्र निर्माण में अग्रणी राज्य बनाने का स्वप्न अवश्य साकार होगा।

मंगलवार को पार्टी कार्यालय में अपने समर्थकों के साथ पहुंचकर उन्होंने पार्टी के केंद्रीय और प्रांतीय नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व जिला कार्यालय पहुंचने पर प्रदेश महासचिव दिनेश सिंह बिष्ट ने रवींद्र प्रसाद जुयाल व उनके समर्थकों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कहा कि ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति के पार्टी में जुड़ने से उत्तराखंड जैसे सैनिक बाहुल्य क्षेत्र में निश्चित रूप से सैनिकों, पूर्व सैनिकों में पार्टी के प्रति रुझान बढ़ेगा। जिला महासचिव पपेंद्र सिंह रावत ने कहा कि रवींद्र जुयाल के पार्टी में आने से अब सामान्य कार्यकर्ताओं का उत्साह भी बढ़ रहा है और आम आदमी हिमालय क्रांति पार्टी में जुड़ने को तत्पर दिखाई दे रहा है। इस मौके पर बबीता देवी, अनूप पंवार, गजपाल सिंह रावत,पंकज कुमार, गबर सिंह रावत,जय नंद कोठारी, सुरेंद्र नेगी, विमला देवी,सुरेश चमोली, सोबन सिंह रावत, टीटू नेगी, आदि शामिल रहे।

मारपीट के दो दोषियों को सदाचार पर रहने का आदेश

रुद्रप्रयाग : जनपद में खांकरा स्थित मैक्स इंफ्रा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में हुई मारपीट के मामले में न्यायालय ने दो अभियुक्तों को दोषी ठहराते हुए एक वर्ष की अवधि तक सदाचार पर रहने का आदेश दिया है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अभियोजन अधिकारी प्रमोद चन्द्र आर्य ने प्रभावी पैरवी की। घटनाक्रम के अनुसार मैक्स इंफ्रा इंडिया प्रालि के जनरल मैनेजर राजेश कुमार द्वारा पूर्व में कोतवाली रुद्रप्रयाग में तहरीर दी थी कि अभियुक्त अंकित असवाल और आशीष पंवार कंपनी की साइट पर पहुंचे और कर्मचारियों से बहसबाजी करने लगे। जब मैनेजर ने उन्हें समझाने का प्रयास किया तो दोनों ने उनके साथ गाली-गलौज और मारपीट की, जिससे उन्हें चोटें आईं। पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए मामले की विवेचना की और बाद में आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किया। विचारण के बाद मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अशोक कुमार सैनी की न्यायालय ने अभियुक्त अंकित असवाल व आशीष पंवार को दोषसिद्ध ठहराया। न्यायालय ने दोनों को अपराधी परिवीक्षा अधिनियम 1958 की धारा 4 में एक वर्ष तक सदाचार पर रहने का आदेश सुनाया। इस मामले में राज्य सरकार की ओर से प्रभावी पैरवी अभियोजन अधिकारी प्रमोद चन्द्र आर्य द्वारा की गई। (एजेंसी)

लालढांग-चिल्लरखाल मोटर मार्ग निर्माण को सड़क पर निकाली आक्रोश रैली

चिल्लरखाल से सैकड़ों की संख्या में मालवीय उद्यान में पहुंचे लोग

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : लालढांग-चिल्लरखाल मोटर मार्ग निर्माण को लेकर चल रहे आंदोलन के तहत मंगलवार को शहर में आक्रोश रैली निकाली गई। रैली में शामिल लोगों ने केंद्र व प्रदेश सरकार से मार्ग निर्माण की मांग उठाई। कहा कि यदि जल्द मार्ग निर्माण नहीं हुआ तो शहरवासी आगामी विधानसभा चुनाव में अपने मत का प्रयोग नहीं करेंगे।

मंगलवार को चिल्लरखाल से मालवीय उद्यान तक आक्रोश रैली निकाली गई। चिल्लरखाल से जशोधरपुर, किशनपुर, हल्दुखाता, मोटाढांग, दुर्गापुरी, निंबूचौड़, तड़ियाल चौक, देवी रोड, नजीबाबाद रोड से होते हुए सैकड़ों लोग झंडाचौक पहुंचे और राष्ट्रीय राजमार्ग पर बैठकर सांकेतिक धरना दिया। इसके बाद लोग बदरीनाथ मार्ग होते हुए मालवीय उद्यान में पहुंचे। यहां आयोजित सभा में लोगों ने सरकार से मार्ग निर्माण की मांग उठाई। कहा कि हर चुनाव में मार्ग निर्माण का सपना दिखाया जाता है। लेकिन, आज तक यह सपना धरातल पर नहीं उतर पाया है। नतीजा, आज भी शहरवासियों को अपने राज्य की राजधानी देहरादून जाने के लिए उत्तर प्रदेश की सड़क से होकर जाना पड़ता है। कहा कि यदि मार्ग निर्माण होता है तो इससे कोटद्वार शहर व भाबर क्षेत्र का बेहतर विकास होगा। स्थानीय युवाओं के लिए स्वरोजगार की संभावनाएं भी बनेंगी।

साथ ही जशोधरपुर स्थित फैक्ट्रियों को भी इसका फायदा मलेगा। कहा कि यदि 2027 से पूर्व मार्ग निर्माण नहीं हुआ तो शहरवासी विधानसभा चुनाव में मतदान नहीं करेंगे। इस मौके पर कांग्रेस की पूर्व प्रदेश महामंत्री रंजना रावत, बेरोजगार संघ के अध्यक्ष राम कंडवाल, उक्रांद के महानगर अध्यक्ष जगदीपक रावत, रमेश भंडारी, मदन सिंह नेगी, राजेंद्र पंत, सुबोधनी गौड़, विजयपाल मेहरा, प्रवीन थापा, कांता प्रसाद आदि मौजूद रहे।

स्वयं सेवियों ने किया पथ संचलन

कोटद्वार में पथ संचलन करते स्वयं सेवी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) सुदर्शन उपनगर की ओर से शहर में पथ संचलन किया गया। इस दौरान आमनज को राष्ट्रीय सेवक संघ के बारे में बताया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वक्ता आरएसएस के प्रांत कार्यसमिति सदस्य ऋतुराज, कार्यक्रम अध्यक्ष राकेश काला एवं नगर कार्यवाह प्रशांत कुकरेती ने शस्त्र पूजन एवं प्रभु श्री राम व मां भारती के चित्र के समक्ष पूजन कर किया। स्वयं सेवकों द्वारा पूर्णगणवेश में मानपुर, बेलाडाट से आंचल दूध डायरी होते हुए पदमपुर चौक से ज्ञानवृक्ष विद्यालय तक पथ संचलन किया गया।

इस दौरान क्षेत्र की महिलाओं ने स्वयं सेवकों पर पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया। मानपुर में मुख्य वक्ता ऋतुराज ने संघ की 100 वर्ष की गौरवपूर्ण यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ की यह यात्रा त्याग, सेवा, अनुशासन और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। डॉ. हेडगेवार, गुरुजी, बाबासाहब देवरास, रज्जू भैया सहित सभी संघ प्रमुखो एवं मार्गदर्शकों का स्मरण करते हुए उन्होंने संघ को घर-घर तक पहुंचाने हेतु अपने विचार रखें तथा संघ के पंच परिवर्तन एवं युवाओं में स्वयं का भाव एवं देश भक्ति का जागरण पर अपने विचार रखें। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि मातृभूमि की रक्षा हेतु शास्त्र के साथ शस्त्र जरूरी है। कलयुग में संगठन में ही शक्ति है इस मौके पर सुदर्शन उपनगर कार्यवाह विजेंद्र मैंदोला, सह कार्यवाह रोहित बलोदी, मणिराम शर्मा, सतीश देवरानी, हिमांशु द्विवेदी, अमित कुमार आदि मौजूद रहे।

बाल भारती ने जीता शहीद मुकेश बिष्ट स्मृति फुटबाल प्रतियोगिता का खिताब

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : बारहवीं शहीद मुकेश बिष्ट स्मृति फुटबॉल प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला मंगलवार को बाल भारती और एमकेवीएन के मध्य खेला गया। जिसमें बाल भारती ने 2-1 से जीत दर्ज कर प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम किया।

फाइनल मैच का शुभारंभ गिरिराज सिंह रावत एवं प्रकाश कोठारी ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। पहले हाफ के 25वें मिनट में बाल भारती के खिलाड़ी ने 20 गज की दूरी से गोल कर टीम को बढ़त दिला दी, दूसरे हाफ में एमकेवीएन के दिव्यांशु नेगी ने पेनल्टी के जरिये गोल कर स्कोर बराबर कर दिया। इसके बाद दोनों ही टीमों ने गोल करने का भरसक प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। इंजरी टाइम में बाल भारती के शिव कुमार ने निर्णायक गोल कर बाल भारती को इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता का दूसरी बार चैंपियन बना दिया। इस मौके पर सर्वाधिक गोल करने वाले ओम रावत को गोल्डन बूट, आयुष बिष्ट को गोल्डन गलव्स, दिव्यांशु नेगी को गोल्डन बॉल से नवाजा गया।

श्रीमती लक्ष्मी रावत ने सामर्थ बिष्ट को उदायिमान खिलाड़ी एवं अंतराष्ट्रीय कोच सुनील रावत ने सर्वश्रेष्ठ खिलाडी का पुरस्कार यथार्थ भारद्वाज को दे कर पुरस्कृत किया। उपविजेता टीम को मेडल, ट्रॉफी प्रकाश कोठरी द्वारा एवं छः हजार की नकद धनराशि सेवानिवृत ले. कर्नल चनद्रपाल पटवाल द्वारा प्रदान की गयी। विजेता टीम को ट्रॉफी मुख्य अतिथि पूर्व कबीना मंत्री ाी सुरेंद्र सिंह नेगी द्वारा एवं विजेता धनराशि 12 हजार की धनराशि गिरिराज सिंह रावत द्वारा प्रदान की गयी।

सीएमओ ने इलेक्ट्रिशन से मांगा स्पष्टीकरण

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने बीते दिनों आकस्मिक कक्ष में बिजली की आपूर्ति ठप होने की लापरवाई पर नाराजगी जताते हुए संबंधित आउटसोर्स इलेक्ट्रिशन का स्पष्टीकरण तलब किया।

बीते शनिवार को जिला अस्पताल के आकस्मिक कक्ष में बिजली गुल हो गई थी, चिकित्सकों ने मोबाइल की रोशनी में मरीजों का उपचार किया।

इस लापरवाही पर सीएमओ डॉ. शिव मोहन शुक्ला ने आउटसोर्स इलेक्ट्रिशन सुभाष नेगी का स्पष्टीकरण तलब किया। साथ ही अस्पताल में तत्काल उच्च क्षमता का इनवर्टर लगाने के निर्देश दिए। सोमवार को निरीक्षण के दौरान सीएमओ ने कहा कि अस्पताल में जनरेटर होने के बाद भी आकस्मिक कक्ष में बिजली की आपूर्ति बंद होना गंभीर लापरवाही है।

ढंगसोली में दहशत का अंत: पिंजरे में कैद हुआ आतंक का पर्याय गुलदार

विकासखंड एकेश्वर के अंतर्गत ग्राम ढंगसोली में पिंजरे में कैद गुलदार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विकासखंड एकेश्वर के ग्राम ढंगसोली में पिछले कई महीनों से दहशत का कारण बना गुलदार आखिरकार सोमवार देर शाम पिंजरे में कैद हो गया। गुलदार के पकड़े जाने के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

मालूम हो कि, सोमवार सुबह गुलदार ने घर के आंगन में झाड़ू लगा रहे 45 वर्षीय नीरज पांथरी पर हमला कर दिया था। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों के शोर के बाद गुलदार जंगल की ओर भाग। गुलदार के हमले में नीरज के सिर, हाथ व चेहरे पर चोट आ गई थी।

सीएचसी नौगांवखाल में प्राथमिक उपचार के बाद नीरज को पौड़ी रेफर किया गया। इस घटना के बाद वन विभाग ने एक और पिंजरा लगा दिया। बीती देर शाम इस पिंजरे में एक गुलदार कैद हो गया। गुलदार के पिंजरे में कैद होने से ग्रामीणों ने थोड़ा राहत की सांस तो जरूर ली। लेकिन, ग्रामीणों का कहना है कि अभी भी अन्य गुलदार उनके गांव में दिखाई दे रहे हैं। ग्राम प्रधान मंजू देवी ने कहा कि अभी भी गांव में गुलदार की दहशत बनी हुई है। उन्होंने बताया कि गांव में आए दिन अन्य गुलदार भी दिखाई दे रहे हैं, जिससे कि ग्रामीण डरे और सहमे हुए हैं। दमदेवल रेंज के रेंज अधिकारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि पिंजरे में कैद गुलदार को रेस्क्यू सेंटर भेजा गया है।

त्योहार सीजन में यातायात व्यवस्था बनाने में करें सहयोग

पुलिस क्षेत्राधिकारी निहारिका सेमवाल ने ली पीस कमेटी की बैठक

कोटद्वार कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक लेते पुलिस क्षेत्राधिकारी निहारिका सेमवाल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : त्योहार सीजन को देखते हुए पुलिस क्षेत्राधिकारी निहारिका सेमवाल ने पीस कमेटी की बैठक ली। कहा कि त्योहार सीजन में यातायात सहित अन्य व्यवस्था को बनाने के लिए आमजन को पुलिस का सहयोग करना चाहिए। उन्होंने लोगों से किसी भी अफवाह पर ध्यान न देने की अपील की। कहा कि माहौल बिगाड़ने वालों के खिलाफ पुलिस सख्त कार्रवाई करेगी।

कोतवाली में आयोजित बैठक में शहर के संभ्रांत लोगों ने भाग लिया। बैठक को संबोधित करते हुए पुलिस क्षेत्राधिकारी ने कहा कि त्योहार सीजन को देखते हुए शहर में भीड़ बढ़ने लगी है। ऐसे में शांति व्यवस्था बनाने के लिए पुलिस गंभीरता से कार्य कर रही है। कानून व्यवस्था बनी रहें इसके लिए अमाजन को पुलिस का सहयोग करना चाहिए। इस दौरान उन्होंने लोगों से किसी भी अफवाह पर ध्यान न देने की अपील की। कहा कि अफवाह फैलाने वालों की सूचना पुलिस को दें। मंगलवार को पुलिस क्षेत्राधिकारी निहारिका सेमवाल ने कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक ली। उन्होंने कहा कि त्योहार सीजन में शहर में भीड़ बढ़ने लगती है। बड़ी संख्या में शहरवासी खरीददारी करने के लिए बाजार पहुंचते हैं। ऐसे में लोगों को ध्यान देना है कि यातायात व्यवस्था में किसी भी तरह का खलल न पहुंचे। सड़क पर बेतरतीब तरीके से वाहनों को खड़ा न करें। कहा कि सड़क पर नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। कहा कि यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए शहर में पुलिस की अतिरिक्त टीमें तैनात की जाएंगी। सीसीटीवी के माध्यम से शहर की सड़कों पर निगरानी रखी जाएगी। कहा कि हमें सभी धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए त्योहार को शांति पूर्वक संपन्न करना चाहिए। किसी भी तरह की अफरवाहों पर ध्यान न दें। त्योहारों की रौनक तभी बनी रहती है जब समाज में शांति, भाईचारा और परस्पर विश्वास कायम रहता है। किसी भी आपात स्थिति में तत्काल 112 डायल कर पुलिस को सूचना दें।

निदेशक ने जारी किए गेस्ट शिक्षकों की सेवाएं बहाल के आदेश

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जीबी पंत इंजीनियरिंग कॉलेज घुड़दौड़ी से हटाएं गए पांच गेस्ट शिक्षकों की सेवाएं बहाल कर दी गई है। कॉलेज के निदेशक ने गेस्ट शिक्षकों की बहाली के आदेश जारी कर दिये है। बता दें कि एआईसीटीई मानकों के तहत शैक्षिक भार का हवाला देते हुए संविदा पर रखे इन पांच शिक्षकों को शैक्षिक सत्र के बीच में ही करीब डेढ़ महीने में ही हटाया गया था। हालांकि इस मामले में कॉलेज के निदेशक डॉ. विजय कुमार बंगा ने रिव्यू की बात भी कही थी। अतिथि शिक्षकों के बीच सत्र में सेवा समाप्त पर उनके सामने आर्थिक संकट भी खड़ा हो गया था। अब बीओजी के आदेश के बाद पांचों अतिथि शिक्षकों की सेवाएं कॉलेज में पुरानी सेवा शर्तों के तहत ही बहाल कर दी गई है। कॉलेज के निदेश-ाक डॉ. विजय कुमार बंगा ने बताया कि गेस्ट शिक्षकों की बहाली की आदेश जारी कर दिए गए है और वह पूर्व की तरह शैक्षणिक कार्य करेंगे।

शरदकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिता में ओवरऑल चैंपियन बना पौड़ी ब्लॉक

दुगड्डा ब्लॉक दूसरे और एकेश्वर रहा तीसरे स्थान पर

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिला मुख्यालय पौड़ी के रांसी स्टेडियम में माध्यमिक शिक्षा की चार दिवसीय 75वीं जनपद स्तरीय शरदकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिता में विकासखंड पौड़ी ओवरऑल चैंपियन बना। जबकि दुगड्डा ब्लॉक ने दूसरा और एकेश्वर ब्लॉक ने तीसरा स्थान हासिल किया। मंगलवार को आयोजित वॉलीबाल प्रतियोगिता के सीनियर बालक वर्ग में नैनीडांडा विजेता, थलीसैंण उपविजेता बना। जूनियर बालक वर्ग वॉलीबाल में भी नैनीडांडा विजेता व रिखणीखाल उपविजेता रहा।

मंगलवार को रांसी स्टेडियम में आयोजित प्रतियोगिता के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि व्यापार संघ अध्यक्ष विनय शर्मा रहे। उन्होंने प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को मेडल प्रदान किए। समापन पर ओवरऑल चैंपियनपियन को ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान वॉलीबाल, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, क्रिकेट, बास्केटबॉल, जूडो और योग प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के समापन दिवस पर बैडमिंटन जूनियर बालिका वर्ग में पौड़ी की प्राची प्रथम, खुशी द्वितीय, रिखणीखाल की अंशिका तृतीय स्थान पर रही। सब जूनियर बालिका वर्ग बैडमिंटन में एकेश्वर की अक्षिता पहले, कोट ब्लाक की राधिका दूसरे व हंसिका तीसरे स्थान पर रहे। सीनियर बालक वर्ग बैडमिंटन में जीत डोभाल प्रथम, ललित सिंह कोरंगा द्वितीय व सोनू तृतीय, जूनियर बैडमिंटन बालक वर्ग में विश्वजीत मंडल प्रथम, कुलभूषण द्वितीय, रमेश चंद्र सिंह तृतीय स्थान पर रहे।

66332 बच्चों को पिलाई जाएगी पोलियो की दवा

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिले में आगामी 12 अक्टूबर से शुरू होने जा रहे उप राष्ट्रीय प्रतिरक्षण अभियान (पल्स पोलियो) के तहत 5 साल तक के 66332 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जायेगी। अभियान की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी स्वाति एस भदौरिया ने बैठक ली। एक सप्ताह तक चलने वाले पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी ने स्वास्थ्य विभाग के साथ ही अन्य विभागों को सहयोग करने के निर्देश दिए। बैठक में डीएम ने बताया कि 12 अक्टूबर को सभी पोलियो बूथों पर पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। उन्होंने सभी ब्लाकों में इसको लेकर टास्क फोर्स बैठक का आयोजन करने को कहा। डीएम ने स्वास्थ्य विभाग के अफसरों को जिले में निर्माण स्थलों पर काम कर रहे मजदूरों, कोटद्वार व कालागढ़ क्षेत्र में वन गुज्जरों के बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक अनिवार्य रूप से पिलाने के निर्देश दिए। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. शिवमोहन शुक्ला ने बताया कि इस अभियान में 5 साल तक के 66332 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने के लिए 656 पोलियो बूथ व 16 ट्रांजिट बूथ बनाए गए है। बताया कि 167350 घरों पर घर-घर जाकर पोलियो की खुराक पिलाने के लिए 1312 टीमों का गठन किया गया है।

आज खिलाई जाएगी 148364 बच्चों को एल्बेएण्डाजॉल दवाई

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : स्वास्थ्य विभाग पौड़ी की ओर से बुधवार को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर 1924 सरकारी स्कूलों 364, निजी विद्यालयों 1857 आंगनबाड़ी व 38 व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों के माध्यम से 1 से 19 आयु वर्ष तक के सभी बच्चों को कृमि नाशक दवायी एल्बेएण्डाजॉल खिलाई जाएगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. शिव मोहन शुक्ला ने बताया कि कार्यक्रम के तहत जनपद में कुल 148364 बच्चों को एल्बेंडाजोल की दवाई खिलाई जाएगी। बताया कि कार्यक्रम के सफल संचालन को लेकर ब्लॉक स्तर पर दवा वितरण के साथ ही ब्लाक स्तर पर सभी स्कूल प्रबन्धन आगंनबाडी व आशा कार्यकत्रियों के प्रशिक्षण के साथ ही आवश्यक कार्यवाहियां पूरी की जा चुकी हैं। उन्होंने बताया कि बुधवार को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर स्कूलों, आंगनबाड़ी व व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में बच्चों को कृमि नाशक दवायी एल्बेएण्डाजॉल खिलाई जाएगी। स्कूल और आगंनबाड़ी केंद्रों में दवा खाने से छूटे बच्चों को 15 अक्टूबर को मॉप अपडे दिवस पर दवा खिलायी जाएगी।

अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए अपनाएं स्वदेशी वस्तु

भारतीय जनता पार्टी की ओर से आयोजित की गई कार्यशाला

कोटद्वार में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ करते अतिथि

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : आमजन को स्वदेशी उत्पादों के प्रति जागरूक करने के लिए भारतीय जनता पार्टी की ओर से कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें आमजन से देश में निर्मित वस्तुओं को खरीदने की अपील की गई। कहा कि देश की बेहतर तरक्की के लिए हमें स्वदेशी को अपनाना चाहिए। सोमवार को आयोजित कार्यशाला में मुख्य वक्ता नैनीताल के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रदीप बिष्ट व भाजपा जिलाध्यक्ष राजगौरव नौटियाल ने स्वदेशी सामान खरीदने के महत्व के बारे में बताया। वक्ताओं ने कहा कि इस देशव्यापी अभियान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक में स्वदेशी उत्पादों के प्रति गर्व की भावना जगाना और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत करना है। हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी के संकल्प का यह अभियान 25 सितंबर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर प्रारंभ हुआ और 25 दिसंबर को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर सम्पन्न होगा। तीन महीनों तक चलने वाले इस अभियान में स्वदेशी मेलों, प्रदर्शनियों, निबंध व क्विज प्रतियोगिताओं, व्यापारी व उद्यमी सम्मेलन, युवाओं के लिए सिग्नेचर ड्राइव, इनोवेशन टॉक्स, रील्स प्रतियोगिताएं, स्वदेशी रथ यात्राएं, प्रभात फेरियां और सांस्कृतिक गतिविधियां जैसे नुक्कड़ नाटक एवं कला प्रतियोगिताएं शामिल होंगी। कहा कि हमें स्वदेशी को अपनाकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना चाहिए। इस मौके पर प्रदेश मंत्री नेहा जोशी, सह प्रभारी संदीप गोयल, लैंसडाउन विधायक महंत दिलीप रावत, महापौर शैलेन्द्र सिंह रावत, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह बिष्ट, गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष राजेंद्र अन्थवाल, आत्मनिर्भर भारत अभियान के जिला संयोजक मोहन नेगी आदि मौजूद रहे।

जयंती पर निकाली महर्षि बाल्मीकि की झांकी

दुगड्डा नगर क्षेत्र में महर्षि बाल्मीकि जयंती पर निकाली गई झांकी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : दुगड्डा क्षेत्र में महर्षि बाल्मीकि की जयंती धूमधाम के साथ मनाई गई। झांकी में मौजूद भगवान राम, सीता, हनुमान, शिव व राधा-कृष्ण की झांकी ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। झांकी को देखने के लिए सड़क किनारे लोगों की भीड़ उमड़ी हुई थी।

बाल्मीकि मंदिर से निकाली गई झांकी का शुभारंभ नगर पालिकाध्यक्ष शांति बिष्ट ने किया। वक्ताओं ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि प्राचीन भारत के महान ऋषि, कवि और संस्कृत के आदि कवि माने जाते हैं। उन्होंने रामायण जैसे अमन ग्रंथ की रचना की, जिसमें भगवान श्री राम के जीवन, आदर्शों और मर्यादाओं का वर्णन है। बच्चों व युवाओं को ऋषि मुनियों व महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। समाज के बेहतर निर्माण में दिए गए महर्षि बाल्मीकि के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसके उपरांत झांकी धनीराम बाजार सहित अन्य क्षेत्रों से होते हुए वापस बाल्मीकि मंदिर में पहुंची। इस दौरान झांकी में मौजूद महर्षि बाल्मीकि, राम-सीता, राधा-कृष्ण व हनुमान की झांकी ने सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। झांकी में युवा शक्ति प्रदर्शन करते हुए भी चल रहे थे। इस मौके पर सभाषद अतुल अग्रवाल, युवा संघ के अध्यक्ष अंकित कुमार, दीपक, रेनू सुंदरियाल, सुनीता देवी, अंशु जैन, योगेंद्र बिष्ट, पिपिन गुसाईं आदि मौजूद रहे।

नगर मे निकली महर्षि वाल्मीकि की शोभायात्रा

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : बाल्मीकि जयंती के अवसर पर नगर मे निकली महर्षि वाल्मीकि की शोभायात्रा के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोटद्वार द्वारा पुष्पार्जन किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक तील्लू रौतेली चौक मे सम्मलित हुये और शोभा यात्रा मे महर्षि वाल्मीकि के चित्र पर पुष्पार्जन किया ।

इस अबसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समरसता प्रमुख मणिराम जिला संघ चालक बिष्णु आग्रवाल ,नगर संघ चालक डॉ वीरेंद्र रावत जिला प्रचारक कमल नगर प्रचारक गौरव जी जिला प्रचार प्रमुख अरविन्द दुदपुड़ी , जिला कार्यवाह संदीप, नगर कार्यवाह प्रशांत , नगर प्रचार प्रमुख खेम , हेमेंद्र नौटियाल ,योगेश , बिजेंद्र मैदौला ,बिपुल ,चंदन नकोटी, राजेश ,सुनील डोबरियाल , ब्रजमोहन आदि शिवम सेवक उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

महर्षि वाल्मीकि प्रकट दिवस पर भव्य शोभायात्रा निकाली

देहरादून। त्रिकालदर्शी महर्षि वाल्मीकि प्रकट दिवस पर वाल्मीकि समाज उत्थान सभा ने नगर में बैंड बाजों व आकर्षक झांकियों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा मलिंगार होते हुए गांधी चौक तक पहुंची जहां जगह जगह स्वागत किया गया। महर्षि वाल्मीकि जयंती पर वाल्मीकि उत्थान सभा ने भव्य शोभा यात्रा निकाली। श्री सनातन धर्म मंदिर में पहले भगवान वाल्मीकि व डोली की पूजा अर्चना की गई। उसके बाद जयकारों के साथ शोभायात्रा निकाली गयी जो मलिंगार चौक, गुरूद्वारा चौक, लंढौर चौक, लंढौर बाजार, घंटाघर, शहीद भगत सिंह चौक व मालरोड होते हुए लाइब्रेरी महर्षि वाल्मीकि मंदिर तक गई।यहां प्रसाद वितरण के साथ शोभायात्रा का समापन किया गया। शोभा यात्रा में भगवान वाल्मीकि के जीवन से जुड़ी झांकियों के साथ ही राम दरबार, शिव परिवार सहित अनेक आकर्षक झांकियों के साथ ही डोली निकाली गयी।रास्ते भर शोभायात्रा का स्वागत किया गया व प्रसाद वितरित किया गया। इस मौके पर पालिकाध्यक्ष मीरा सकलानी, पूर्व पालिकाध्यक्ष मनमोहन सिंह मल्ल, ओपी उनियाल, अनुज गुप्ता, शहर कांग्रेस अध्यक्ष अमित गुप्ता, भाजपा मंडल अध्यक्ष रजत अग्रवाल, जगजीत कुकरेजा, उपेंद्र थापली, सोमेंद्र वोहरा, बाल्मीकि समाज उत्थान सभा के अध्यक्ष निरंजन लाल, सनातन धर्म मंदिर सभा के अध्यक्ष दीपक अग्रवाल महामंत्री नीरज अग्रवाल, गुलशन कुमार, पालिका सभासद सचिन गुहेर, रूचिता गुप्ता, अतुल अग्रवाल, विजय बिंदवाल आदि मौजूद रहे।

23वीं क्षेत्रीय एथलेटिक्स रैली का भव्य शुभारंभ, सनातन स्कूल का रहा दबदबा

देहरादून। सनातन धर्म गर्ल्स इंटर कॉलेज के तत्वाधान में आयोजित 23वीं क्षेत्रीय एथलेटिक्स रैली में तीसरे दिन सनातन स्कूल का दबदबा रहा। सर्वे के मैदान के आयोजित की गयी एथलेटिक्स रैली में नगर क्षेत्र मसूरी के सात विद्यालयों के 250 से अधिक खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता को तीन वर्गों वरिष्ठ, कनिष्ठ और सब जूनियर वर्ग में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि मीरा सकलानी ने कहा कि खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मन और आत्मा को भी अनुशासित बनाते हैं। छात्रों को पढ़ाई के साथ–साथ खेलों में भी समान रुचि रखनी चाहिए, क्योंकि यही उनके सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। आयोजक सनातन धर्म इंटर स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. नम्रता श्रीवास्तव ने कहा कि खेल छात्रों में आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना का निर्माण करते हैं। रैली में प्रथम दिवस सीनियर बालक वर्ग 800 मीटर, 1500 मीटर एवं 3000 मीटर दौड़ में संजीव कुमार आर.एन. भार्गव इंटर कॉलेज मसूरी ने पहला स्थान हासिल किया। सब जूनियर बालक वर्ग 1500 मीटर दौड़ में आरएन भार्गव के राकेश प्रथम, सनातन धर्म गर्ल्स इंटर कालेज के आरिफ द्वितीय व निर्मला इंटर कालेज के अनुज ने तीसरा स्थान हासिल किया। सीनियर बालिका वर्ग 800 मीटर दौड़ में सनातन धर्म गर्ल्स इंटर कालेज की कुमारी पूर्वी प्रथम, मसूरी गर्ल्स इंटर कालेज की मिष्टी द्वितीय व मसूरी गर्ल्स इंटर कालेज की दीपांशी तृतीय रहीं। 400 मीटर सीनियर बालक वर्ग में निर्मला इंटर कालेज के पीयूष ने पहला इसी विद्यालय के विकास ने दूसरा व अटल उत्कृष्ट घनानंद राजकीय इंटर कालेज के सुमित ने तीसरा स्थाना हासिल किया।

भाजपा ने वाल्मीकि जयंती पर प्रदेशभर में दी श्रद्धांजलि

देहरादून। भाजपा ने प्रदेश भर में वाल्मीकि जयंती पर उनके विचारों को आत्मसात करते हुए श्रद्धांजलि कार्यक्रम किए। प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने कार्यकर्ताओं से महर्षि वाल्मीकि के प्रेरणादायक उद्धरणों को अपने जीवन में उतारने का आग्रह किया है। देहरादून स्थित पार्टी मुख्यालय में प्रदेश अध्यक्ष समेत भाजपा नेताओं ने महर्षि वाल्मिकी को श्रद्धांजलि दी।

भट्ट ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने अनेकों प्रेरणादायक उद्धरण मानव जीवन और समाज को दिए हैं। महर्षि वाल्मीकि उन ऋषियों में है जिन्होंने ऐसा महान ग्रंथ रचा, जिसमें प्रस्तुत प्रभु श्रीराम के जीवन वृतांत ने युगों युगों तक सभी पीढ़ियों का पथ प्रदर्शन किया है। भट्ट ने कहा कि भविष्य में उनकी जयंती को हर वर्ष मात्र एक कार्यक्रम नहीं बल्कि व्यक्तिगत प्रेरक प्रभाव के साथ मनाई जाएगी। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद नरेश बंसल, विनय गोयल, प्रदेश प्रवक्ता कमलेश रमन, मुकेश कोली, राजकुमार पुरोहित समेत अन्य मौजूद रहे।

तीस दिवसीय सिलाई प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जयन्त प्रतिनिधि। थलीसैंण : युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल विभाग थलीसैंण द्वारा ग्राम कपरोली में आयोजित तीस दिवसीय सिलाई प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हो गया है। मंगलवार को प्रशिक्षण शिविर के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रमुख श्रीमती सुनीता रावत ने महिलाओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर क्षेत्र पंचायत सदस्य कपरोली एवं सिलाई प्रशिक्षक श्रीमती कमला देवी, रविन्द्र रावत प्रधान ग्राम पंचायत बगेली, दरबान सिंह पूर्व प्रधान सलोन, बलवीर सिंह पूर्व प्रधान कुचोली, भगत सिंह ग्राम डुंगरी, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी दिनेश चौहान, रोशनी रावत, हरीश राणा, कैलाश चंद्र, प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

पशु सखी कर रही पशुओं का टीकाकरण

रुद्रप्रयाग : जनपद में ग्रामोत्थान परियोजना से आच्छादित अगस्त्यमुनि, जखोली एवं ऊखीमठ ब्लाक में पशु सखियों द्वारा मवेशियों में खुरपका एवं मुहंपका रोग की रोकथाम के लिए टीकाकरण किया जा रहा है। साथ ही पशुपालकों को जागरूक भी किया जा रहा है। टीकाकरण अभियान में पशुपालन विभाग द्वारा विशेष सहयोग दिया जा रहा है। पशु सखी अंजू डबराल ने बताया कि टीकाकरण से पशुओं को खुरपका एवं मुहंपका रोग से बचाया जा सकता है। यह रोग पशु के दूध, लार, मल, मूत्र, वीर्य, और सांस के माध्यम से निकलने वाले वायरस के कारण फैलता है। एक स्वस्थ पशु यदि सीधे या परोक्ष रूप से इनसे संपर्क में आता है तो वह संक्रमित हो सकता है। रोग का प्रसार श्वसन द्वारा, भोजन-पानी के माध्यम के साथ ही दूषित चारे, बर्तनों, कपड़ों व वाहनों से भी हो सकता है। ग्रामोत्थान परियोजना में सहायक प्रबंधक आजीविका अनुपम रयाल एवं जिला परियोजना प्रबंधक ब्रह्मकांत भट्ट ने बताया कि पशु सखियों द्वारा किए जा रहे टीकाकरण अभियान से पशुओं को बीमारी से बचाया जा सकेगा। (एजेंसी)

महर्षि वाल्मीकि जयंती पर निकाली गई शोभायात्रा

जयन्त प्रतिनिधि।

लैंसडौन : पर्यटन नगरी लैंसडाउन में बाल्मीकि समिति की ओर से महर्षि वाल्मीकि जयंती के अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई। बड़ी संख्या में श्रद्धालु, महिलाएं, बच्चे और युवा इसमें शामिल हुए। नगर क्षेत्र में जगह-जगह लोगों ने पुष्प वर्षा कर शोभा यात्रा का स्वागत किया।

मंगलवार को बैंड बाजों के साथ महर्षि वाल्मीकि की विभिन्न झांकियां नगर क्षेत्र लैंसडाउन में निकाली गई। मंगलवार को वाल्मीकि मंदिर में पूजा अर्चना करने के बाद भगवान वाल्मीकि की शोभायात्रा निकाली गई। महर्षि वाल्मीकि की विभिन्न झांकियो के साथ शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण आदि की झांकियो ने नगर का भ्रमण किया। शोभायात्रा में आकर्षक झांकियां सभी के

आकर्षण का केंद्र रहीं। शोभा यात्रा वाल्मीकि मंदिर परिसर से प्रारंभ होकर के माल रोड होते हुए ऐतिहासिक गांधी चौक पर पहुंची और वापस मंदिर परिसर पर आकर संपन्न हुई। इस मौके पर लैंसडौन क्षेत्र के विधायक दिलीप रावत सहित समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य मौजूद रहे।

ग्रामीणों ने नम आंखों से किया नंदा को ससुराल विदा

रुद्रप्रयाग : पर्यटक गांव सारी में नंदा देवी को ग्रामीणों ने पूजा अर्चना के बाद एक बेटी की तरह मायके से ससुराल विदा किया। इस दौरान ग्रामीणों की आंखें नम हो गई।

विदाई का यह अद्भुत क्षण देखकर हर कोई भावुक हो गया। विश्व प्रसिद्ध पर्यटक स्थल देवरियाताल के आधार शिविर पर्यटन गांव सारी में नंदा मेला संपंन हो गया। बीती रात नंदा देवी ने गांव का भ्रमण कर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दिया। जबकि मंगलवार सुबह सभी लोग बारिश के बीच एकत्रित हुए और मां नंदा देवी की पूजा अर्चना की। देवी को खाजा, चूडा, मुंगरी, अखरोट आदि खाद्य व श्रृंगार सामग्री भेंटकर करते हुए खीर का भोग लगाया गया। ठीक उसी तरह नंदा को विदा किया गया जिस तरह एक बेटी को मायके से ससुराल विदा किया जाता

है। विदाई के समय का माहौल भावुकता भरा रहा। हर किसी केअ आंखों में आंसू दिखे। कोई भी अपने आंसुओं को रोक नहीं सका। विशेषकर महिलाएं ज्यादा भावुक हुई। नंदा देवी को उसके पूजा स्थल मक्कूमठ के लिए वाद्य यंत्रों की धुन और भक्तों की जयकारों के साथ विदा किया गया। देवी की विदाई में मौजूद धियाणियां, बुजुर्ग और महिलाओं ने नंदा देवी का फूल मालाओं, अक्षत चढ़ाकर विदा किया। नंदा देवी की मूर्ति को एक पोटली में बांधकर पीठ में रखकर गाजे बाजों के साथ भेजा गया। ग्रामीण देवी को गांव की सीमा तक विदा करने पहुंचे। यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। नंदा देवी को ससुराल भेजने के दौरान नंदा देवी मेला कमेटी के अध्यक्ष जगदीश सिंह स्वयं मौजूद थे। इस मौके पर क्षेत्र पंचायत सदस्य भरत सिंह नेगी, नंदा पश्वा अंकित नेगी, क्षेत्रपाल पश्वा सतवीर नेगी, कालिंका देवी पश्वा सूरज नेगी, सरपंच मुरली सिंह नेगी, नंदा पयारी नर्मदा देवी, कुब्जा देवी, दिलवर पहाड़ी, रणजीत नेगी, कुलदीप नेगी, दयाल नेगी, मयंक नेगी, भरत भट्ट, प्रदीप भट्ट सहित धियाणियां, बुजुर्ग, महिलाएं, बच्चे मौजूद थे। (एजेंसी)

गुलदार की चहलकदमी से दहशत में लोग

रुद्रप्रयाग : मुख्यालय स्थित पुनाड़ पांडव चौक में बीती रात गुलदार की चहलकदमी दिखने से लोग दशहत में है। यहां आसपास आवासीय भवन हैं इसलिए लोग गुलदार के दिखने से डरे हुए हैं। स्थानीय लोगों ने वन विभाग से लोगों की सुरक्षा के लिए रात में वन कर्मियों की गश्त लगाने के साथ ही सुरक्षा इंतजाम करने की मांग की है। बीती रात पुनाड़ स्थित पांडव चौक में गुलदार के विचरण करने का सीसीटीबी वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें गुलदार पांडव चौक में बिना डर के घूम रहा है। चौक से आते हुए वह बाजार आने वाले रास्ते से नीचे की ओर जाते हुए दिख रहा है। इस वीडियो के बाद लोगों में डर का माहौल है। स्थानीय निवासी हरीश गिरी, लक्ष्मण कप्रवान, अनंत नौटियाल, शैलेंद्र गोस्वामी, अरुण कप्रवान, चन्द्रशेखर पुरोहित, सभासद नरेंद्र रावत, कांता प्रसाद ढौंडियाल आदि ने वन विभाग से लोगों की सुरक्षा के लिए मध्य रात को वन कर्मियों की गश्त कराने एवं सुरक्षा के इंतजाम करने की मांग की है। कहा कि कई बार लोगों ने गुलदार को बस्ती की ओर आते देखा है जिससे लोगों में डर का माहौल है।

आवासीय क्षेत्रों में बनाए जा रहे पटाखों के गोदाम

रुद्रप्रयाग : आगामी दीपावली पर्व को देखते हुए इन दिनों पटाखों को स्टोर किया जा रहा है। कई व्यापारी नियमों को ताक में रखते हुए पटाखों को आवासीय भवनों और बस्ती के बीच भंडारण कर रहे हैं। जबकि यहां उनके अग्नि सुरक्षा उपकरण के साथ ही सुरक्षा मानक नहीं है।

ऐसे में यह खतरनाक हो सकते हैं। मुख्यालय सहित सम्पूर्ण जनपद में दीपावली के लिए पटाखों की बड़ी संख्या में दुकानें लगती हैं ऐसे में सुरक्षा मानकों पर किसी की नजर नहीं है। बे-रोकटोक पटाखों के गोदाम आवासीय भवनों के साथ ही घनी बस्ती के बीच बनाए जा रहे हैं। इस दिशा में पुलिस पूरी तरह बेखबर है। दीपावली संपंन होने के बाद भी इन गोदामों में पटाखे रखे रहते हैं जिससे निरंतर खतरा बना रहता है। पटाखों के लिए पट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन से विस्फोटक लाइसेंस प्राप्त करने के साथ ही प्रशासन और पुलिस से भी अनुमति लेनी पड़ती है। प्रशासन और पुलिस भी कई शर्तों पर पटाखों का लाइसेंस जारी करती है किंतु पटाखों के प्रति प्रशासन और पुलिस गंभीर नहीं दिखाई दे रहा है। भंडारण के उचित सुरक्षा मानकों की पूरी तरह अनदेखी की जा रही है। ज्वलनशील पदार्थों से दूरी बनाए रखने की दिशा में कोई निगरानी नहीं की जा रही है जिससे खुलेआम आवासीय घनी बस्ती और बाजारों के बीच पटाखों के गोदाम बनाए जा रहे हैं। बड़ी मात्रा में पटाखे स्टोर किए जा रहे हैं।

छात्रों ने आत्मरक्षा के सीखें गुर

जयन्त प्रतिनिधि।

सतपुली : इंडियन रैनबूकन कराटे डूट एसोसिएशनके तत्वाधान में लाज में आयोजित दस दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण सम्पन्न हो गया है। इस दौरान 250 छात्र-छात्राओं ने आत्मरक्षा के गुर सीखें। कार्यक्रम में आशाएं सेवा समिति नौगांवखाल के पदाधिकारी नीरज पांथरी, मुक्ता सेमवाल, नीतू इष्टवाल के सहयोग से 10 बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की गई।

मंगलवार को प्रशिक्षण के समापन अवसर पर ग्रीनलैंड पब्लिक स्कूल, मार्ड पब्लिक स्कूल, विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, हंस सन राइज स्कूल सतपुली के 250 छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नगर पंचायत सतपुली अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह चौहान के प्रतिनिधि उम्मेद सिंह रावत ने छात्रों को जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम डॉ. योगेन्द्र रावत, देवेश्वरी देवी, सुनील ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये अति महत्वपूर्ण है। इस मौके पर डॉ. विजय सिंह, मीनाक्षी सिंह, सुमन चौहान आदि मौजूद थे।

सांसद चंद्रशेखर पर लगाया महिलाओं की आवाज दबाने का आरोप

देहरादून। अभिनेत्री उर्मिला सनावर ने नगीना के सांसद चंद्रशेखर रावण पर महिलाओं का उत्पीड़न कर आवाज दबाने का आरोप लगाया है। कहा कि उन्होंने स्विटजरलैंड में रह रही भारतीय महिला डॉक्टर पर और उन पर मुकदमा दर्ज करवाया है। मंगलवार को प्रेस क्लब में पत्रकारों से बातचीत में अभिनेत्री उर्मिला सनावर निवासी सहारनपुर ने कहा कि सांसद चंद्रशेखर ने स्विटजरलैंड में रह रही महिला डॉक्टर को शादी का झांसा दिया था। दावा किया कि डॉक्टर ने सांसद पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके समर्थन में उन्होंने भी सोशल मीडिया पर बात रखी है जिस पर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया। कहा कि महिलाओं की आवाज दबाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने सांसद से इस्तीफा देने की मांग की है।

अग्निपथ योजना देश की सुरक्षा की दृष्टि से विनाशकारी : राम रतन नेगी

अग्निपथ योजना के खिलाफ कांग्रेस की यात्रा पहुंची सतपुली

जयन्त प्रतिनिधि। सतपुली : कांग्रेस की अग्निपथ योजना के खिलाफ यात्रा मंगलवार को सतपुली पहुंची। इस अवसर पर सभा को संबंधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस पूर्व सैनिक विभाग अध्यक्ष कर्नल राम रतन सिंह नेगी ने कहा कि अग्निपथ योजना न केवल युवाओं को देश की सेवा के अवसर से वंचित कर रही है, बल्कि यह योजना देश की सुरक्षा की दृष्टि से विनाशकारी है।

कर्नल नेगी ने कहा कि आज हम एक पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक तैयार नहीं कर रहे जो युद्ध के मोर्चे पर दुश्मन को धूल चटा सके। कहा कि चार साल की सेवा के लिए भर्ती युवा ना तो पूर्ण रूप से प्रशिक्षित हो पाता है ना ही उसके अंदर युद्ध लड़ने का आत्मविश्वास रहता है, क्योंकि वह पहले ही अपने भविष्य के प्रति सशंकित रहता है कि चार साल बाद उसका क्या होगा और अगर वह शहीद हो गया तो उसके परिवार का क्या होगा। कर्नल नेगी ने कहा कि अग्निवीर को तो शहीद होने पर शहीद का दर्जा तक नहीं दिया जाता तो देश के लिए शहीद होने का जज्बा सैनिक के पास कहां से आएगा। कर्नल नेगी ने अग्निपथ योजना में भर्ती अग्निवीर और नियमित भर्ती होने वाले सैनिक के बीच की विषमताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर प्रदेश पूर्व सैनिक विभाग के उपाध्यक्ष गोपाल गड़िया ने कहा कि अग्निपथ योजना के खिलाफ जनजागरण रथ यात्रा को चार चरणों में प्रदेश के गढ़वाल कुमाऊं व तराई के सभी जनपदों में ले जाया जाएगा। सभा की अध्यक्षता करते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष जितेंद्र चौहान ने कहा कि पौड़ी जनपद में पूर्व सैनिकों को लामबंद कर अग्निपथ योजना के दुष्परिणामों को समझाना होगा। इस अवसर पर सूबेदार मेजर शेखर नेगी, सूबेदार रणधीर नेगी, नगर कांग्रेस अध्यक्ष सुरजन रैतेला, पूर्व प्रधानाचार्य उमेद सिंह रावत, व्यापार मंडल अध्यक्ष जय दीप सिंह नेगी, कैप्टन शोबन सिंह सजवान, आनंद सिंह पुंडीर आदि मौजूद थे। कार्यक्रम संचालन बलबीर सिंह पंवार ने किया।

हर व्यक्ति तक पहुँचेगा योग, आर्थिक रूप से कमजोरों को मिलेगा नि:शुल्क प्रशिक्षण

देहरादून। योग की महत्ता और जीवन में उसके व्यापक प्रभावों को समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से वरेणियम योग संस्थान ने एक नई पहल की है। संस्थान का उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी को योग के लाभों से परिचित कराया जाए और हर व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ बनाने की दिशा में कार्य किया जाए। संस्थान के संस्थापकों ने बताया कि आज की व्यस्त जीवनशैली में योग ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को संतुलन और शांति प्रदान करता है। इसीलिए वरेणियम योग संस्थान ने यह प्रतिज्ञा ली है कि यदि कोई युवा या बीमार व्यक्ति योग सीखना चाहता है लेकिन आर्थिक कारणों से ऐसा करने में असमर्थ है, तो उसे संस्थान पूरी तरह निःशुल्क योग प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगा। इतना ही नहीं,

जो लोग किसी कारणवश संस्थान तक नहीं पहुँच सकते, उनके लिए वरेणियम योग संस्थान ऑनलाइन योग सत्रों की सुविधा भी प्रदान करेगा ताकि कोई भी व्यक्ति योग से वंचित न रह जाए।संस्थान ने यह प्रेरणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विचारों और योग के प्रति उनके दृष्टिकोण से ली है। मोदी जी द्वारा विश्वभर में योग को लोकप्रिय बनाने के प्रयासों से प्रभावित होकर, वरेणियम योग संस्थान ने समाज के हर वर्ग को योग से जोड़ने का संकल्प लिया है।

कांवली रोड पर निकली वाल्मीकी शोभायात्रा

देहरादून। भगवान महर्षि वाल्मीकि जयंती के अवसर पर कांवली रोड स्थित भगवान वाल्मीकि मंदिर से शोभा यात्रा निकाली गई। ये शोभा यात्रा कांवली रोड से गोविंदगढ़ से तिलक रोड होते हुए वापस कांवली रोड तक निकाली गई। इस मौके पर भगवान वाल्मीकि और अन्य भगवान के चित्रों से जुड़ी झांकियां भी शामिल रहीं। झांकियों ने लोगों को आकर्षित किया। मंगलवार को यात्रा का शुभारंभ कांग्रेस प्रदेश महामंत्री व राज्य आंदोलनकारी वीरेंद्र पोखरियाल, पूर्व विधायक राजकुमार और वाल्मीकि समाज से चौधरी मदन लाल, प्रधान श्याम सिंह और वरिष्ठ कांग्रेस नेता संजय शर्मा ने किया। सुबह कांवली स्थित भगवान वाल्मीकि मंदिर से वाल्मीकि समाज से जुड़े लोगों ने शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा में भगवान वाल्मीकि से जुड़ी झांकिया आकर्षक का केंद्र रही। कांग्रेस प्रदेश महासचिव वीरेंद्र पोखरियाल ने वाल्मीकि समाज को वाल्मीकि जयंती की बधाई दी और सभी के खुशहाल होने की भगवान वाल्मीकि से कामना की।

आरटीआई क्लब ने किया वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

देहरादून। आरटीआई जनता के अधिकार उन्हें दिलाने का मजबूत हथियार है। इसका सही प्रयोग करके आसानी से हक दिलाया जा सकता है। इसके दुरुपयोग से काफी नुकसान हो रहा है, आरटीआई का काम लोगों को उनके अधिकार दिलाना है, ना कि अराजकता फैलाना। यह बातें आरटीआई क्लब की ओर से आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में छात्र छात्राओं ने कहीं। उन्होंने आरटीआई के तहत सूचना देने में कुछ विभागों की देरी की पोल भी खोली। आरटीआई क्लब की ओर से मंगलवार को तस्मिया एकेडमी में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय सूचना का अधिकार के बीस वर्ष–अपेक्षाएं और अनुभूतियां रहा। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका आरटीआई क्लब के अध्यक्ष डॉ बी पी मैठाणी, संरक्षक विनोद नौटियाल, सचिव यज्ञ भूषण शर्मा और हिमालयन ड्रग कंपनी के अध्यक्ष डॉ एस फारूक ने निभाई। प्रतियोगिता में पांच कॉलेजो के छात्रों ने प्रतिभाग किया। स्वाती सिंह ने विषय के पक्ष में कहा कि आरटीआई यानी सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 में आया था। इसका उद्देश्य आम जनता और सरकारी कामों के बीच पारदर्शिता और जवाबदेही लाना था। इस अधिनियम ने अपना उद्देश्य अच्छे से पूरा किया था। लोगों को जानकारी मिलती है।

सीएम धामी के निर्देश पर प्रदेशभर में मिलावटखोरों के खिलाफ अभियान तेज

देहरादून। त्योहारी सीजन को देखते हुए प्रदेशभर में मिलावटखोरों के खिलाफ खाद्य संरक्षा एंव औषधि प्रशासन विभाग यानि एफडीए का सघन अभियान जारी है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और स्वास्थ्य मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मिलावट करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के आदेश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा है कि त्योहारी मौसम में उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं होगा। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बाजार में बिक रहे मावा, पनीर, घी, दूध और मिठाइयों की गुणवत्ता पर सख्त निगरानी रखी जाए ताकि मिलावटखोरी पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके। सभी जनपदों में सघन छापेमारी अभियान जारीः स्वास्थ्य सचिव एवं आयुक्त, खाद्य संरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग, डॉ. आर. राजेश कुमार ने त्योहारी सीजन में अपर आयुक्त (खाद्य सुरक्षा) ताजबर सिंह जग्गी को निर्देशित किया है कि सभी जनपदों में निरंतर निरीक्षण और छापेमारी अभियान चलाया जाए। राज्य के सीमावर्ती जिलों में भी विशेष सतर्कता बरती जा रही है ताकि बाहरी राज्यों से नकली और बिना मानक खाद्य सामग्री की आपूर्ति पर रोक लगाई जा सके। विभागीय टीमें मोबाइल वैन के माध्यम से तेजी से सैंपलिंग कार्य कर रही हैं। डॉ. राजेश कुमार ने कहा कि प्रयोगशालाओं को निर्देश दिए गए हैं कि सैंपलों की जांच शीघ्रता से की जाए, जिससे दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई तुरंत सुनिश्चित हो सके। त्योहारी सीजन में जांच की रफ्तार तेजः आयुक्त डॉ आर राजेश कुमार ने बताया कि मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब्स लगातार

बाजारों में जाकर मावा, खोया, पनीर, मिठाई और तेल जैसे उत्पादों की मौके पर जांच कर रही हैं। विभागीय टीमें प्रदेश के हर जिले, कस्बे और प्रमुख बाजारों में सैंपलिंग कर रही हैं ताकि हर उपभोक्ता तक सुरक्षित, शुद्ध और गुणवत्ता युक्त खाद्य पदार्थ पहुंच सकें। सरकार का स्पष्ट संदेश है मिलावटखोरी के खिलाफ कोई रियायत नहीं, उपभोक्ता की सेहत सर्वोपरि। अपर आयुक्त ताजबर सिंह जग्गी कर रहे हैं अभियान का नेतृत्वः अपर आयुक्त ताजबर सिंह जग्गी स्वयं विभिन्न जिलों में चल रहे छापेमारी अभियानों का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि देहरादून, हरिद्वार, उधमसिंह नगर और नैनीताल जिलों के साथ चारधाम यात्रा मार्गों व पर्यटन स्थलों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। इन क्षेत्रों में अतिरिक्त टीमें तैनात की गई हैं, जो मावा, पनीर, घी और मिठाइयों के सैंपल एकत्र कर प्रयोगशालाओं में जांच हेतु भेज रही हैं। जांच में दोषी पाए जाने वाले प्रतिष्ठानों के विरुद्ध तत्काल सीलिंग, लाइसेंस निरस्तीकरण और जुर्माने की कार्रवाई की जा रही है। भगवानपुर में नकली डेयरी उत्पादों की बड़ी खेप पकड़ी गई : खाद्य सुरक्षा विभाग एवं पुलिस की संयुक्त टीम ने आज सुबह लगभग 5 बजे भगवानपुर के बालेकी युसुफपुर गांव में एक वाहन को रोककर जांच की। वाहन में बिना गुणवत्ता प्रमाणीकरण और स्वास्थ्य मानकों के पनीर सप्लाई की जा रही थी। जांच में यह भी पाया गया कि उत्पादों पर किसी प्रकार का एफएसएसएआई मानक अंकन या लेबलिंग नहीं थी, जो उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है। टीम ने मौके पर ही उत्पादों को जब्त कर वाहन चालक और सप्लायर के खिलाफ खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत मामला दर्ज किया। अपर आयुक्त ताजबर सिंह जग्गी ने बताया कि भगवानपुर क्षेत्र में नकली डेयरी उत्पादों की आपूर्ति करने वाले गिरोहों पर विभाग की विशेष नजर है। आने वाले दिनों में लगातार कार्रवाई की जाएगी।

ऋषिकेश में भी मिली नकली घी और मिल्क पाउडर की खेप : इसी क्रम में ऋषिकेश में भी खाद्य सुरक्षा विभाग ने बड़ी कार्रवाई की।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
–सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com